Class: B.A. 1st year | Course Code: MUSA104PR

Subject: Music (Vocal/Instrumental) | Course Name: Viva-Voce

MUSIC
(Viva-Voce)

Lesson : 1 - 13

Dr. Mritunjay Sharma

Centre for Distance & Online Education (CDOE)
Himachal Pradesh University
Gyan Path, Summer Hill, Shimla-171005

विषय सूची

क्रम	इकाई	विषय	पृ. सं.
1		विषय सूची	ii
2		प्राक्कथन	iii
3		पाठ्यक्रम	iv
4	इकाई - 1	यमन राग का सरगम गीत (गायन के संदर्भ में)	1
5	इकाई - 2	भूपाली राग का सरगम गीत (गायन के संदर्भ में)	14
6	इकाई - 3	बिहाग राग का सरगम गीत (गायन के संदर्भ में)	29
7	इकाई - 4	यमन राग का द्रुत ख्याल/लक्षणगीत (गायन के संदर्भ में)	43
8	इकाई - 5	भूपाली राग का द्रुत ख्याल/लक्षणगीत (गायन के संदर्भ में)	57
9	इकाई - 6	बिहाग राग का द्रुत ख्याल/लक्षणगीत (गायन के संदर्भ में)	73
10	इकाई - 7	यमन राग की स्वरमालिका (वादन के संदर्भ में)	86
11	इकाई - 8	भूपाली राग की स्वरमालिका (वादन के संदर्भ में)	99
12	इकाई - 9	बिहाग राग की स्वरमालिका (वादन के संदर्भ में)	115
13	इकाई - 10	यमन राग की द्रुत गत (वादन के संदर्भ में)	125
14	इकाई - 11	भूपाली राग की द्रुत गत (वादन के संदर्भ में)	138
15	इकाई - 12	बिहाग राग की द्रुत गत (वादन के संदर्भ में)	152
16	इकाई - 13	ताल • एकताल • झपताल	164
17		महत्वपूर्ण प्रश्न	177

प्राक्कथन

संगीत स्नातक के नवीन पाठ्यक्रम के क्रियात्मक विषय के MUSA104PR में संगीत से सम्बन्धित उपयोगी सामग्री का समावेश किया गया है। संगीत में प्रायोगिक तथा सैद्धान्तिक दोनों पक्षों का योगदान रहता है। गायन तथा वादन में भी इन्हीं दोनों पक्षों का महत्वपूर्ण स्थान रहता है। संगीत में क्रियात्मक पक्ष के अंतर्गत मंच प्रदर्शन का भी महत्वपूर्ण स्थान रहता है। प्रस्तुत पाठ्यक्रम में संगीत की क्रियात्मक परीक्षा को ध्यान में रखकर पाठ्य सामग्री दी गई है। इस पुस्तक के

इकाई 1 में गायन के संदर्भ में यमन राग का परिचय, अलंकार, आलाप, सरगम गीत/स्वरमालिका आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 2 में गायन के संदर्भ में भूपाली राग का परिचय, अलंकार, आलाप, सरगम गीत/स्वरमालिका आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 3 में के वादन संदर्भ में बिहाग राग का परिचय, अलंकार, आलाप, सरगम गीत/स्वरमालिका आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 4 में गायन के संदर्भ में यमन राग का परिचय, आलाप, द्रुत ख्याल/लक्षणगीत, तानें आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 5 में गायन के संदर्भ में भूपाली राग का परिचय, आलाप, द्रुत ख्याल/लक्षणगीत, तानें आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 6 में गायन के संदर्भ में बिहाग राग का परिचय, आलाप, द्रुत ख्याल/लक्षणगीत, तानें आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 7 में वादन के संदर्भ में यमन राग का परिचय, अलंकार, आलाप, स्वरमालिका आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 8 में वादन के संदर्भ में भूपाली राग का परिचय, अलंकार, आलाप, स्वरमालिका आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 9 में के वादन संदर्भ में बिहाग राग का परिचय, अलंकार, आलाप, स्वरमालिका आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 10 में वादन के संदर्भ में यमन राग का परिचय, आलाप, द्रुत गत, तोड़े आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 11 में वादन के संदर्भ में भूपाली राग का परिचय, आलाप, द्रुत गत, तोड़े आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 12 में वादन के संदर्भ में बिहाग राग का परिचय, आलाप, द्रुत गत, तोड़े आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 13 में ताल पक्ष से एकताल तथा झपताल का परिचय तथा बोलों का एकगुण, दुगुण, तिगुण व चौगुण में वर्णन किया गया है।

प्रत्येक इकाई में शब्दावली, स्वयं जांच अभ्यास प्रश्न तथा उत्तर, संदर्भ, अनुशंसित पठन, पाठगत प्रश्न दिए गए हैं।

प्रस्तुत पाठ्यक्रम को लिखने के लिए स्वयं के अनुभव से, संगीतज्ञों के साक्षात्कार से तथा संगीत से सम्बन्धित पुस्तकों द्वारा शिक्षण सामग्री एकत्रित की गई है। मैं उन सभी संगीतज्ञों तथा लेखकों का आभारी हूं जिनके ज्ञान द्वारा तथा जिनकी संगीत संबंधी पुस्तकों द्वारा शिक्षण सामग्री को यहां लिया गया है। आशा है कि विद्यार्थियों के लिए यह पुस्तक लाभप्रद होगी।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा

COURSE CODE MUSA104PR

Hindustani Music

Paper-II Practical (Unit-II)

Title - Viva-Voce

Max Marks 50 (35+15 Assesment) **Credit 3**

Raga

- Yaman
- Bhoopali
- Bihag

Vocal Music

- Swaramalika/Sargamgeet in any one of three Ragas
- Drut- Khayal in all Rãgas.

Instrumental Music

- Sargamgeet / Swaramallika in any one of three Rãgas
- Razakhani gat in all of the Rãgas

Vocal & Instrumental

- Ability to recite the following Tãlas with Tãli&Khãli with Thah and Dugun
- Ektãl
- Jhaptãl

- Vocal - Playing of Tanpura is compulsory
- Basic knowledge of Playing SargamGeet on Harmonium

इकाई-1
यमन राग का सरगम गीत/स्वरमालिका (गायन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
1.1	भूमिका
1.2	उद्देश्य तथा परिणाम
1.3	यमन राग का परिचय तथा सरगम गीत/स्वरमालिका
1.3.1	यमन राग का परिचय
1.3.2	यमन राग के अलंकार
1.3.3	यमन राग का आलाप
1.3.4	यमन राग का सरगम गीत/स्वरमालिका नं. 1
1.3.5	यमन राग का सरगम गीत/स्वरमालिका नं. 2
1.3.6	यमन राग का लक्षण गीत
	स्वयं जांच अभ्यास 1
1.4	सारांश
1.5	शब्दावली
1.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
1.7	संदर्भ
1.8	अनुशंसित पठन
1.9	पाठगत प्रश्न

1.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA104PR की यह पहली इकाई है। इस इकाई में गायन के संदर्भ में यमन राग के सरगम गीत/स्वरमालिका को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, तथा आनंददायक होता है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा रागों के चलन को जानने के लिए सरगम गीतों/स्वरमालिकों का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। किसी राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की तालबद्ध रचना को सरगम गीत कहा जाता है। इसे स्वरमालिका भी कहते हैं। इससे स्वर-ज्ञान के साथ-साथ लय तथा राग के स्वरुप को जानने में वृद्धि होती है। इससे विद्यार्थियों में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास संभव होता है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी यमन राग में सरगम गीत/स्वरमालिका को गाने से, राग के स्वरुप की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे, उन्हें भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे तथा क्रियात्मक रूप से यमन राग के सरगम गीतों/स्वरमालिका को गा सकेंगे।

1.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- यमन राग के क्रियात्मक स्वरूप की जानकारी प्रदान करना।
- यमन राग के सरगम गीत/स्वरमालिका को गाने की क्षमता विकसित करना।
- यमन राग के सरगम गीत/स्वरमालिका को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी, गायन के अंतर्गत, यमन राग के क्रियात्मक स्वरूप के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी, गायन के अंतर्गत, यमन राग के सरगम गीत/स्वरमालिका को लिखने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी, गायन के अंतर्गत, यमन राग के सरगम गीत/स्वरमालिका को गाने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी, गायन के अंतर्गत, कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास होगा।
- विद्यार्थी में, गायन के अंतर्गत, यमन राग के सरगम गीत/स्वरमालिका से, संगीत के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

1.3 यमन राग का परिचय तथा सरगम गीत/स्वरमालिका (गायन के संदर्भ में)

1.3.1 यमन राग का परिचय

प्रथम पहर निशि गाइये ग नि को कर संवाद।

जाति संपूर्ण तीवर मध्यम यमन आश्रय राग ॥

राग - यमन

थाट - कल्याण

जाति - सम्पूर्ण-सम्पूर्ण।

स्वर – मध्यम तीव्र (मं)

वादी - ग

सम्वादी - नि

गायन वादन समय - रात्रि का प्रथम पहर

न्यास के स्वर - ग, प, नि।

समप्रकृतिक राग - यमन कल्याण।

आरोह - ऩि रे ग, मं प, मं ध नि रें सां।

अवरोह - सां नि ध प मं ध प मं ग रे ऩि रे सा।

पकड़ - ऩि ध़ ऩि रे ग, रे सा, ऩि रे ग मं प, प रे ग, रे ऩि रे सा।

इस राग के दो नाम हैं यमन अथवा कल्याण। कुछ लोग इसे ईमन भी कहते हैं, किन्तु कल्याण इसका प्राचीन नाम है। यह कल्याण राग का आश्रय राग भी हैं, अर्थात इसके नाम पर ही इसके थाट का नाम भी है। इस राग की चलन अधिकतर मंद्र ऩि से प्रारंभ होती है, तथा तीनो सप्तकों में होती है। इसमें ऩि रे ग और प रे स्वर-समूह बार-बार प्रयोग किये जाते हैं। इस राग की प्रकृति गंभीर है, इसमें बड़ा और छोटा ख्याल, तराना, ध्रुपद तथा मसीतखानी और रजाखानी गतें सभी सामान्य रूप से गाई बजाई जाती है। इस राग में सा, रे, ग, प, और नि स्वरों पर न्यास करते हैं।

1.3.2 यमन राग के अलंकार

- **आरोह-** सा रे ग मं प ध नि सां

  अवरोह- सां नि ध प मं ग रे सा

- **आरोह-** सा सा, रे रे, ग ग,मं मं, प प, ध ध, नि नि, सां सां

  अवरोह- सां सां, नि नि, ध ध, प प,मं मं, ग ग, रे रे, सा सा

- **आरोह-** सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, मं मं मं, प प प, ध ध ध, नि नि नि, सां सां सां

  अवरोह- सां सां सां, नि नि नि, ध ध ध, प प प, मं मं मं, ग ग ग, रे रे रे, सा सा सा

- **आरोह-** सा रे सा, रे ग रे, ग मं ग, मं प मं, प ध प, ध नि ध, नि सां नि, सां रें सां

  अवरोह- सां रें सां, नि सां नि, ध नि ध, प ध प, मं प मं, ग मं ग, रे ग रे, सा रे सा

- **आरोह-** सा रे ग, रे ग मं, ग मं प, मं प ध, प ध नि, ध नि सां

  अवरोह- सां नि ध, नि ध प, ध प मं, प मं ग, मं ग रे, ग रे सा

- **आरोह-** सा रे ग मं, रे ग मं प, ग मं प ध, मं प ध नि, प ध नि सां

  अवरोह- सां नि ध प, नि ध प मं, ध प मं ग, प मं ग रे, मं ग रे सा

- **आरोह-** सा रे ग मं प, रे ग मं प ध, ग मं प ध नि, मं प ध नि सां

  अवरोह- सां नि ध प मं, नि ध प मं ग, ध प मं ग रे, प मं ग रे सा

- **आरोह-** सा ग रे, रे मं ग, ग प मं, मं ध प, प नि ध, ध सां नि, नि रें सां

  अवरोह- नि रे सां, ध सां नि, प नि ध, मं ध प, ग प मं, रे मं ग, सा ग रे

- **आरोह-** सा रे ग सा, रे ग मं रे, ग मं प ग, मं प ध मं, प ध नि प, ध नि सां ध, नि सां रें नि, सां रें गं सां

  अवरोह- सां रें गं सां, नि सां रें नि, ध नि सां ध, प ध नि प, मं प ध मं, ग मं प ग, रे ग मं रे, सा रे ग सा

- **आरोह-** सा ग रे सा, रे मं ग रे, ग प मं ग, मं ध प मं, प नि ध प, ध सां नि ध, नि रें सां नि, सां गं रें सां

  अवरोह- सां गं रें सां, नि रें सां नि, ध सां नि ध, प नि ध प, मं ध प मं, ग प मं ग, रे मं ग रे, सा ग रे सा

- **आरोह-** सा ग मं रे सा, रे मं प ग रे, ग प ध मं ग, मं ध नि प मं, प नि सां ध प, ध सां रें नि ध, नि रें गं सां नि, सां गं मं रें सां

  अवरोह- सां गं मं रें सां, नि रें गं सां नि, ध सां रें नि ध, प नि सां ध प, मं ध नि प मं, ग प ध मं ग, रे मं प ग रे, सा ग मं रे सा

- **आरोह-** सा ग, रे मं, ग प, मं ध, प नि, ध सां

  अवरोह- सां ध, नि प, ध मं, प ग, मं रे, ग सा

- **आरोह-** सा मं, रे प, ग ध, मं नि, प सां

  अवरोह- सां प, नि मं, ध ग, प रे, मं सा

- **आरोह-** सा प, रे ध, ग नि, प सां

  अवरोह- सां प, नि ग, ध रे, प सा

- **आरोह-** सा रे सा रे ग, रे ग रे ग मं, ग मं ग मं प, मं प मं प ध, प ध प ध नि, ध नि ध नि सां

  अवरोह- सां नि सां नि ध, नि ध नि ध प, ध प ध प मं, प मं प मं ग, मं ग मं ग रे, ग रे ग रे सा

- **आरोह-** सा रे ग सा रे ग मं, रे ग मं रे ग मं प, ग मं प ग मं प ध, मं प ध मं प ध नि, प ध नि प ध नि सां

  अवरोह- सां नि ध सां नि ध प, नि ध प नि ध प मं, ध प मं ध प मं ग, प मं ग प मं ग रे, मं ग रे मं ग रे सा

- **आरोह-** सा रे, रे ग, ग मं, मं प, प ध, ध नि, नि सां

  अवरोह- सां नि, नि ध, ध प, प मं, मं ग, ग रे, रे सा

- **आरोह-** सा रे सा सा रे ग रे सा, रे ग रे रे ग मं ग रे, ग मं ग ग मं प मं ग, मं प मं मं प ध प मं, प ध प प ध नि ध प, ध नि ध ध नि सां नि ध, नि सां नि नि सां रें सां नि, सां रें सां सां रें गं रें सां

  अवरोह- सां रें सां सां रें गं रें सां, नि सां नि नि सां रें सां नि, ध नि ध ध नि सां नि ध, प ध प प ध नि ध प, मं प मं मं प ध प मं, ग मं ग ग मं प मं ग, रे ग रे रे ग मं ग रे, सा रे सा सा रे ग रे सा

- **आरोह-** सा रे सा रे सा ग, रे ग रे ग रे मं, ग मं ग मं ग प, मं प मं प मं ध, प ध प ध प नि, ध नि ध नि ध सां

  अवरोह- सां नि सां नि सां ध, नि ध नि ध नि प, ध प ध प ध मं, प मं प मं प ग, मं ग मं ग मं रे, ग रे ग रे ग सा

- **आरोह-** सा रे रे ग, रे ग ग मं, ग मं मं प, मं प प ध, प ध ध नि, ध नि नि सां

  अवरोह- सां नि नि ध, नि ध ध प, ध प प मं, प मं मं ग, मं ग ग रे, ग रे रे सा

1.3.3 यमन राग का आलाप

- सा, ऩी सा, ऩी रे सा, ऩी सा ऩी ऩी रे सा, ऩी ध़ ऩी ऩी सा।
- सा़ ऩी ध़ प़, ऩी ध़ ऩी ऩी सा, ऩी रे सा, रे ऩी ध़ प़, म़ं ध़ प़, म़ं ध़ ऩी रे सा सा।
- ऩी रे ग, रे ग, रे सा ऩी रे सा, म़ं ध़ ऩी रे ग, रे ग, रे सा
- ऩी रे, ग मं मं प, प, मं ग, रे ग मं, मं ग रे सा
- ग मं प, प, मं ध प, प, मं ध नी नी ध प, प, मं ध नी नी रें सां, सां
- नी रें गं, रें गं, रें सां नी रें सां, नी रें, गं मंं मं पं, पं, मंं गं, रें मंं गं, मंं गं रें सां
- रें नी ध प, प, मं ध प मं ग, रे मं ग रे ऩी रे सा

1.3.4 राग यमन का सरगम गीत/स्वरमालिका नं. 1

राग: यमन **ताल: तीनताल** **लय: मध्य**

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थायी															
								म॑	ध	नी	सा	नी	ध	प	म॑
प	-	-	रे	ग	रे	सा	सा								
								नी	ध	नी	रे	ग	रे	म॑	ग
म॑	ध	नि	ध	प	म॑	ध	प								
								म॑	ध	नी	सा	नी	ध	प	म॑
प	-	-	रे	ग	रे	सा	सा								
								नी	ध	नी	रे	ग	रे	म॑	ग
म॑	ध	नि	ध	प	म॑	ध	प								
अन्तरा															
								ग	ग	म॑	ध	सा	नी	रे	सा
नी	रे	ग	रे	नी	रे	सा	सा								
								नी	रे	नी	ध	नी	ध	प	प
रे	–	ग	म॑	रे	ग	रे	सा								
								ग	ग	म॑	ध	सा	नी	रे	सा
नी	रे	ग	रे	नी	रे	सा	सा								
								नी	रे	नी	ध	नी	ध	प	प
रे	–	ग	म॑	रे	ग	रे	सा								

1.3.5 राग यमन का सरगम गीत/स्वरमालिका नं. 2

राग: यमन **ताल: तीनताल** **लय: मध्य**

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थायी															
प	-	-	-	प	म॑	ग	रे	नी	ध	-	प	म॑	प	ग	म॑
प	म॑	ग	रे	ग	रे	सा	-	सा	रे	ग	रे	ग	म॑	प	ध
रें	सां	नी	ध	प	म॑	ग	म॑	ऩी	रे	ग	म॑	प	ध	नी	सां
अन्तरा															
नी	रें	गं	रें	सां	नी	ध	प	ग	ग	प	ध	प	सां	-	सां
प	म॑	ग	रे	ग	रे	सा	-	गं	रें	सां	नी	ध	प	नी	ध
रें	सां	नी	ध	प	म॑	ग	म॑	ऩी	रे	ग	म॑	प	ध	नी	सां

स्वयं जांच अभ्यास 1

1.1 किसी राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की तालबद्ध रचना को सरगम गीत कहा जाता है।

क) सही

ख) गलत

1.2 स्वरमालिका किसे कहते हैं?

क) राग में प्रयुक्त होने वाली ताल रचना

ख) राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की ताल रहित रचना

ग) राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की तालबद्ध रचना

घ) राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की काव्य रचना

1.3 यमन राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) सा

ख) ग

ग) म॑

घ) प

1.4 यमन राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) नि

ख) ग

ग) म॑

घ) प

1.5 यमन राग में गांधार स्वर कोमल होता है।

क) हां

ख) नहीं

1.6 यमन राग के सरगम गीत/स्वरमालिका में ऋषभ का प्रयोग नहीं होता है।

क) सही

ख) गलत

1.7 यमन राग में मध्यम स्वर विकृत होता है।

क) सही

ख) गलत

1.8 यमन राग का गायन/वादन समय क्या है?

क) रात्रि का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) रात्रि का चौथा प्रहर

घ) दोपहर

1.9 यमन राग में ऩी रे ग स्वर संगति लगती है।

क) गलत

ख) सही

1.10 यमन राग की जाति क्या है?

क) औढव-औढव।

ख) सम्पूर्ण-षाड़व।

ग) षाड़व-षाड़व।

घ) सम्पूर्ण-सम्पूर्ण।

1.4 सारांश

किसी राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की तालबद्ध रचना को सरगम गीत कहा जाता है। इसे स्वरमालिका भी कहते हैं। इससे स्वर-ज्ञान के साथ-साथ लय तथा राग के स्वरुप को जानने में वृद्धि होती है। इससे विद्यार्थियों में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास संभव होता है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा रागों के चलन को जानने के लिए सरगम गीत/स्वरमालिका का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है।

1.5 शब्दावली

- सरगम गीत: किसी राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की तालबद्ध रचना को सरगम गीत कहा जाता है।
- स्वरमालिका: किसी राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की (स्वरों की माला) तालबद्ध रचना को स्वरमालिका कहा जाता है।
- शास्त्रीय संगीत: शास्त्रीय संगीत वह संगीत है जो नियमों से बंधा होता है।

1.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

1.1 उत्तर: क)

1.2 उत्तर: ग)

1.3 उत्तर: ख)

1.4 उत्तर: क)

1.5 उत्तर: ख)

1.6 उत्तर: क)

1.7 उत्तर: क)

1.8 उत्तर: क)

1.9 उत्तर: ख)

1.10 उत्तर: घ)

1.7 संदर्भ

डॉ. केशव शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, मार्च 2024।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

1.8 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

1.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग यमन का सरगम गीत/स्वरमालिका लिखिए।

प्रश्न 2. राग यमन का परिचय लिखिए।

प्रश्न 3. राग यमन के सरगम गीत को गाकर सुनाइए।

इकाई-2
भूपाली राग का सरगम गीत/स्वरमालिका (गायन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
2.1	भूमिका
2.2	उद्देश्य तथा परिणाम
2.3	भूपाली राग का परिचय तथा सरगम गीत/स्वरमालिका
2.3.1	भूपाली राग का परिचय
2.3.2	भूपाली राग के अलंकार
2.3.3	भूपाली राग का आलाप
2.3.4	भूपाली राग का सरगम गीत/स्वरमालिका
	स्वयं जांच अभ्यास 1
2.4	सारांश
2.5	शब्दावली
2.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
2.7	संदर्भ
2.8	अनुशंसित पठन
2.9	पाठगत प्रश्न

2.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA104PR की यह दूसरी इकाई है। इस इकाई में गायन के संदर्भ में भूपाली राग के सरगम गीत/स्वरमालिका को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, तथा आनंददायक होता है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा रागों के चलन को जानने के लिए सरगम गीतों/स्वरमालिकों का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। किसी राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की तालबद्ध रचना को सरगम गीत कहा जाता है। इसे स्वरमालिका भी कहते हैं। इससे स्वर-ज्ञान के साथ-साथ लय तथा राग के स्वरुप को जानने में वृद्धि होती है। इससे विद्यार्थियों में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास संभव होता है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी भूपाली राग में सरगम गीत/स्वरमालिका को गाने से, राग के स्वरुप की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे, उन्हें भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे तथा क्रियात्मक रूप से भूपाली राग के सरगम गीतों/स्वरमालिका को गा सकेंगे।

2.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- भूपाली राग के क्रियात्मक स्वरूप की जानकारी प्रदान करना।
- भूपाली राग के सरगम गीत/स्वरमालिका को गाने की क्षमता विकसित करना।
- भूपाली राग के सरगम गीत/स्वरमालिका को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी, गायन के अंतर्गत, भूपाली राग के क्रियात्मक स्वरूप के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी, गायन के अंतर्गत, भूपाली राग के सरगम गीत/स्वरमालिका को लिखने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी, गायन के अंतर्गत, भूपाली राग के सरगम गीत/स्वरमालिका को गाने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी, गायन के अंतर्गत, कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास होगा।
- विद्यार्थी में, गायन के अंतर्गत, भूपाली राग के सरगम गीत/स्वरमालिका से, संगीत के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

2.3 भूपाली राग का परिचय तथा सरगम गीत/स्वरमालिका (गायन के संदर्भ में)

2.3.1 भूपाली राग का परिचय

राग- भूपाली

थाट- कल्याण

जाति- औडव-औडव

वादी- गंधार

संवादी- धैवत

स्वर - सभी शुद्ध

वर्जित- मध्यम तथा निषाद

समय - रात्रि का प्रथम प्रहर

समप्रकृतिक राग - देशकार, शुद्ध कल्याण

आरोह- सा रे ग, प ध सां

अवरोह- सां ध प ग रे सा

पकड़ - ग, रे सा ध़, सा रे ग, प ग, ध प ग, रे सा।

भूपाली कल्याण थाट का राग माना जाता है। इसकी जाति औडव-औडव है, इस राग में मध्यम तथा निषाद का प्रयोग नहीं किया जाता है। भूपाली का वादी स्वर गंधार तथा संवादी स्वर धैवत माना गया है। इस राग को गाने-बजाने का समय रात्रि का प्रथम प्रहर माना गया है। इसके समप्रकृतिक रागों का नाम देशकार तथा शुद्ध कल्याण है। भूपाली एक अत्यन्त लोकप्रिय राग है। इस राग में ध्रुपद, धमार, ख्याल आदि की अनेक मधुर रचनाएं उपलब्ध है। इसके साथ-साथ गीत, गज़ल, भजन, फिल्मी गीत आदि में इस राग पर आधारित रचनाएं सुनने को मिलती हैं।

भूपाली राग की अधिकतर रचनाओं में गंधार स्वर पर सम का स्थान रहता है। कुछ रचनाओं में षड्ज पर भी सम देखा गया है। गंधार के साथ-साथ रिषभ तथा पंचम स्वर प्रमुख है। आलाप आदि करते समय ध़ रे, सा इस स्वर संगति का प्रयोग करते हुए आलाप के टुकड़ों का अंत किया जाता है, जैसे सा, ध़ सा रे ग, रे सा, ध़ रे सा आदि। भूपाली राग में स्वरों का विस्तार करते समय सा ध़ सा। ध़ रे सा, प ग, रे स्वर संगतियों का बार-बार प्रयोग किया जाता है।

भूपाली राग में मध्यम तथा निषाद के वर्जित रहने से इसकी जाति औडव-औडव है। गंधार स्वर के वादी होने के कारण इस पर पूर्ण न्यास किया जाता है, जैसे ध़ सा रे ग, ग प ग रे ग, सा ध़ सा रे ग, रे ग प ग, रे, ग रे सा।

भूपाली राग का समप्रकृतिक राग देशकार है। भूपाली तथा देशकार दोनों रागों में एक जैसे स्वर लगते हैं- सा रे ग प ध सां, सा ध प ग रे सा। परन्तु स्वरों के एक जैसा होने के साथ-साथ दोनों रागों का चलन अलग अलग है। जिससे इन दोनों में अंतर स्पष्ट रूप से पहचाना जा सकता है। भूपाली राग में हम गंधार तथा पंचम पर न्यास करते हैं। जबकि देशकार राग में हम पंचम तथा धैवत पर न्यास किया जाता है देशकार में गंधार पर कभी नहीं रूकते हैं।

शुद्ध कल्याण राग भी भूपाली का समप्रकृतिक राग माना जाता है। दोनों रागों में ग प ध प, प ग की संगति की जाती है तथा गंधार तथा धैवत क्रमशः वादी संवादी हैं। इसके अतिरिक्त दोनों का आरोह भी एक जैसा है। अंतर की दृष्टि से शुद्ध कल्याण में प रे की संगति बार-बार प्रयुक्त होती है पर भूपाली में यह संगति नहीं ली जाती। इसके अतिरिक्त अवरोह करते समय शुद्ध कल्याण में निषाद का प्रयोग किया जाता है। भूपाली में निषाद वर्जित रहने से, अवरोह करते समय दोनों रागों का अंतर स्पष्ट हो जाता है।

2.3.2 भूपाली राग के अलंकार

- सा रे ग प ध सां
  सां ध प ग रे सा
- सारे रेग गप पध धसां
  सांध धप पग गरे रेसा
- साग रेप गध पसां
  सांप धग परे ग सा
- सारे साग साप साध सासां
  सांध सांप साग सारे सांसा
- सासा रेरे गग पप धध सांसां
  सांसां धध पप गग रेरे सासा
- साप रेध गसां पर्रे धगं
  गंध रेंप सांग धरे पसा
- रेंसा पग धप साध रेंसा गरें
  रेंगं सारें धसां पध गप सारे
- सासा गग रेरे पप गग धध पप सांसां
  सांसां पप धध गग पप रेरे गग सासा
- सासासा रेरेरे गगग पपप धधध सांसांसां
  सांसांसां धधध पपप गगग रेरेरे सासासा

- सागप रेपध गधसां पसारें धरेंगं
  गरेंध रेंसांप सांधग धगरे पगसा
- सागरे रेपग गधप पसांध धरेंसां
  सारेंध धसांप पधग गपरे रेगसा
- रेसाग गरेप पगध धपसां सांगंरें
  रेंगंसां सांपध धगप परेग गसारे
- रेगसा गपरे पधग धसांप सांगंरें
  सांगंरें धपसां गपध रेगप सारेग
- गरेसा पगरे धपग सांधप रेंसांध
  धसारे पधसां गपध रेगप सारेग
- सागप रेपध गधसां पसारें धरेंगं
  गरेंध रेंसांप सांधग धगरे पगसा
- सारेसा रगरे गपग पधप धसांध
  धसांध पधप गपग रेगरे सारेसा
- सारेरे रेगग गपप पधध धसांसां
  सांधध धपप पगग गरेरे रेसासा
- सारेरे गगग गपप पधध धसांसां
  सांधध धपप पगग गरेरे रेसासा
- रेरेरे गगग पपप धधध सांसांसां
  सांसांसां धधध पपप गगग रेरेरे
- सासाध़ रेरेसा गगरे पपग धधप सांसांध
  धधसां पपध गगप रेरेग सासारे ध़ध़सा
- सारेगप रेगपध गपधसां
  सांधपग धपगरे पगरेसा
- सारेगग रेगपप गपधध पधसांसां धसांरेंरें
  रेंसांधध सांधपप धपगग पगरेरे गरेसासा

- सारेगप रेगपध गपधसां पधसारें धसारेंगं
  गरेंसांध रेंसांधप सांधपग धपगरे पगरेसा
- सारेपग रेगधप गपसांध पधरेंसा धसांगरें
  रेंगंसांध सारेंधप धसांपग पधगरे गपरेसा
- सागरेप रेपगध गधपसां पसांधरें धरेंसांगं
  गंसारेंध रेंधसांप सांपधग धगपरे परेगसा
- सागपरे रेपधग गधसांप पसारेंध धरेंगंसां
  सांगरेंध धरेंसांप पसांधग गधगरे रेपगसा
- सारेगसा रेगपरे गपधग पधसांप धसारेंध
  धरेंसांध पसांधप गधपग रेपगरे सागरेसा
- सारेगपध रेगपधसां गपधसारें पधसारेंगं धसारेंगंपं
  पंगरेंसांध गरेंसांधप रेंसांधपग सांधपगरे धपगरेसा
- सारेसारेरे सागसागग सापसापप साधसाधध
  सासांसासांसां सांधसांधध सांपसांपप सांगसागग
  सारेसारेरे सांसासांसासा
- सारेसारेरे रेगरेगग गपगपप पधपधध धसांधसांसां
  सांधसांधध धपधपप पगपगग गरेगरेरे रसारेसासा
- गपगपध पधपधसां धसांधसारें सारेंसारेंगं
  गरेंगरेंसां रेंसारेंसांध सांधसांधप धपधपग
- गरेसाध़प़ पगरेसाध़ धपगरेसा सांधपगरे रेंसांधपग
  गपधसारे रेंगपधसां सारेंगपध धसारेगप प़ध़सारेग
- गरेगरेसा पगपगरे धपधपग सांधसांधप
  पधसांधसां गपधपध रेगपगप सारेगरेसा
- सारेसारेगग रेगरेगपप गपगपधध पधपधसांसां
  सांधसांधपप धपधपगग पगपगरेरे गरेगरेसासा
- सासारेरेगग रेरेगगपप गगपपधध पपधधसांसां

सांसांधधपप धधपपगग पपगगरेरे गगरेरेसासा

- सारेगपधसां रेगपधसारें गपधसारेंगं
  गरेंसांधपग रेंसांधपगरे सांधपगरेसा
- रेगरेगपप गपगपधध पधपधसांसां धसांधसारेंरें
  रेंसारेंसांधध सांधसांधपप धपधपगग पगपगरेसा
- ध़सारेगपध सारेगपधसां रेगपधसारें गपधसारेंगं पधसेंरेंगंपं
  पंगरेंसांधप गरेंसांधपग रेंसांधपगरे सांधपगरेसा सांधपगरेसा ध़पगरेसाध़
- पगपगरेसा धपधपगरे सांधसांधपग रेंसारेंसाधप
  पधपधसारें गपगपधसां गरेंगरेंधप सारेसारेपग
- ध़ध़ध़ध़सारे सासासासारेग रेरेरेरेगप गगगगपध पपपपधसां
  सांसांसांसांधप धधधधपग पपपपगरे गगगगरेसा रेरेरेरेसाध़
- सारेगपसारे रेगपधरेग गपधसांगप पधसारेंपध धसारेंगंधसां
  सांधगरेंसांध धपरेंसांधप पखसांधपग गरेधपगरे रेसापगरेसा
- सागरेसा रेपगरे गधपग पसांधप धरेंसांध सांगरेंसा
  गंसारेंगं गंसारेगं रेंधसारें सांपधसां धगपध परेगप गसारेग
- सापरेंग रेधगप गसांपध परेंधसां धगंसारें
  गंधरेंसा रेंपसांध सांगधप धरेपग पसागरे
- सापगरे रेधपग गसांधप परेसांध धगरेंसां
  गंधसारें रेंपधसां सांगपध धरेगप पसारेग
- सारेगपधसारें रेगपधसारेंगं गपधसारेंगंपं
  पंगरेंसांधपग गरेंसांधपगरे रेंसांधपगरेसा
- सारे साग सारे गरे रेग रेप रेग पग गप गध गप
  धप पध पसां पध सांध सांध सांप सांध पध धप
  धग धप गप पग परे पग रेग गरे गसा गरे सारे
- सारे गप धसां धप गरे सारे गप धप गरे सारे

गप गरे सारे गरे सारे सा-

- सा
  सा रे सा
  सा रे ग रे सा
  सा रे ग प ग रे सा
  सा रे ग प ध प ग रे सा
  सा रे ग प ध सां ध प ग रे सा

- सा रे ग रे
  सा रे ग प ग रे
  सा रे ग प ध प ग रे
  सा रे ग प ध सां ध प ग रे
  सा रे ग प ध सां रें सां ध प ग रे
  सा रे ग प ध सां रें गं रें सां ध प ग रे
  सा रे ग प ध प ग रे सा

- सा – सां – सां ध प ग रे सा
  ध़ – ध – ध प ग रे सा
  प – प – प ग रे सा
  रे – रे – रे सा
  सा – सा – सा

2.3.3 भूपाली राग का आलाप

- सा ध़, सा ध़ सा, सा रे ग, रे सा, ग रे सा, ध़, सा, सा रे ग, रे सा।
- सा रे ग, सा रे सा, ग, रे सा, सा ग, प ग, रे ग, ध़, सा रे
  सा ग प ग, ध प ग प ध प, रे ग, रे सा।
- सा ध़ प़ सा, रे सा, सा रे ग, ध सा, रे ग, सा, प़ ध़ सा रे ग, प ग,
  ध प ग,रे ग प ग, रे ग रे सा।
- सा रे ग प, ग रे, ध प, ग प ग रे, सा रे ग रे, सा रे ध़ सा,
  सा ध़ सा प़ ध़ सा, प़ ध़ प़ सा ग रे सा।
- सा रे ग रे ग प, ध प, ग प, ग रे, सा रे ग रे, ग प ध प,
  ग रे सा रे ध सां।
- सा रे ग प ध ग, रे ग, रे ग, प ग, ग प ध सां, सां ध प, ग रे ग प ध प ग,
  रे ग रे सा रे सा ध़ सा रे ग रे ग, प ग, ध सां गं रें सां ध, प ग, रे सा।

2.3.4 राग भूपाली का सरगम गीत/स्वरमालिका

राग: भूपाली **ताल: तीनताल** **लय: मध्य**

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थायी															
								सा	ध	सा	रे	ग	रे	सा	रे
प	-	ग	रे	ग	रे	सा	सा								
								ग	ग	प	प	ध	ध	प	प
ग	रे	ग	प	ग	रे	सा	सा								
								सा	ध	सा	रे	ग	रे	सा	रे
प	-	ग	रे	ग	रे	सा	सा								
								ग	ग	प	प	ध	ध	प	प
ग	रे	ग	प	ग	रे	सा	सा								
अंतरा															
								ग	ग	ग	ग	प	प	ध	प
सा	–	सा	सा	सा	रे	सा	सा								
								सा	रे	ग	रे	सा	रे	सा	ध
प	सा	ध	ध	ग	रे	सा	सा								
								ग	ग	ग	ग	प	प	ध	प
सा	–	सा	सा	सा	रे	सा	सा								
								सा	रे	ग	रे	सा	रे	सा	ध
प	सा	ध	ध	ग	रे	सा	सा								

स्वयं जांच अभ्यास 1

2.1 किसी राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की तालबद्ध रचना को सरगम गीत कहा जाता है।

क) सही

ख) गलत

2.2 स्वरमालिका किसे कहते हैं?

क) राग में प्रयुक्त होने वाली ताल रचना

ख) राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की ताल रहित रचना

ग) राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की तालबद्ध रचना

घ) राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की काव्य रचना

2.3 भूपाली राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) सा

ख) ग

ग) म

घ) प

2.4 भूपाली राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) ध

ख) ग

ग) म

घ) प

2.5 भूपाली राग में गांधार स्वर कोमल होता है।

क) हां

ख) नहीं

2.6 भूपाली राग के सरगम गीत/स्वरमालिका में ऋषभ का प्रयोग नहीं होता है।

क) सही

ख) गलत

2.7 भूपाली राग में मध्यम स्वर विकृत नहीं होता है।

क) सही

ख) गलत

2.8 भूपाली राग का गायन/वादन समय क्या है?

क) रात्रि का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) रात्रि का चौथा प्रहर

घ) दोपहर

2.9 भूपाली राग में ऩी रे सा ग स्वर संगति लगती है।

क) सही

ख) गलत

2.10 भूपाली राग की जाति क्या है?

क) औढव-औढव।

ख) सम्पूर्ण-षाड़व।

ग) षाड़व-षाड़व।

घ) सम्पूर्ण-सम्पूर्ण।

2.4 सारांश

किसी राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की तालबद्ध रचना को सरगम गीत कहा जाता है। इसे स्वरमालिका भी कहते हैं। इससे स्वर-ज्ञान के साथ-साथ लय तथा राग के स्वरुप को जानने में वृद्धि होती है। इससे विद्यार्थियों में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास संभव होता है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा रागों के चलन को जानने के लिए सरगम गीत/स्वरमालिका का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है।

2.5 शब्दावली

- सरगम गीत: किसी राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की तालबद्ध रचना को सरगम गीत कहा जाता है।
- स्वरमालिका: किसी राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की (स्वरों की माला) तालबद्ध रचना को स्वरमालिका कहा जाता है।
- शास्त्रीय संगीत: शास्त्रीय संगीत वह संगीत है जो नियमों से बंधा होता है।

2.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

2.1 उत्तर: क)

2.2 उत्तर: ग)

2.3 उत्तर: ख)

2.4 उत्तर: क)

2.5 उत्तर: ख)

2.6 उत्तर: क)

2.7 उत्तर: क)

2.8 उत्तर: क)

2.9 उत्तर: ख)

2.10 उत्तर: क)

2.7 संदर्भ

डॉ. केशव शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, मार्च 2024।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

2.8 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

2.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग भूपाली का सरगम गीत/स्वरमालिका लिखिए।

प्रश्न 2. राग भूपाली का परिचय लिखिए।

प्रश्न 3. राग भूपाली के सरगम गीत को गाकर सुनाइए।

प्रश्न 4. राग भूपाली के आलाप को गाकर सुनाइए।

प्रश्न 5. राग भूपाली के आलाप को लिखिए।

इकाई-3
बिहाग राग का सरगम गीत/स्वरमालिका (गायन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
3.1	भूमिका
3.2	उद्देश्य तथा परिणाम
3.3	बिहाग राग का परिचय तथा सरगम गीत/स्वरमालिका
3.3.1	बिहाग राग का परिचय
3.3.2	बिहाग राग का आलाप
3.3.3	बिहाग राग के अलंकार
3.3.4	बिहाग राग का सरगम गीत/स्वरमालिका
	स्वयं जांच अभ्यास 1
3.4	सारांश
3.5	शब्दावली
3.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
3.7	संदर्भ
3.8	अनुशंसित पठन
3.9	पाठगत प्रश्न

3.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA104PR की यह तीसरी इकाई है। इस इकाई में गायन के संदर्भ में बिहाग राग के सरगम गीत/स्वरमालिका को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, तथा आनंददायक होता है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा रागों के चलन को जानने के लिए सरगम गीतों/स्वरमालिकों का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। किसी राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की तालबद्ध रचना को सरगम गीत कहा जाता है। इसे स्वरमालिका भी कहते हैं। इससे स्वर-ज्ञान के साथ-साथ लय तथा राग के स्वरुप को जानने में वृद्धि होती है। इससे विद्यार्थियों में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास संभव होता है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी बिहाग राग में सरगम गीत/स्वरमालिका को गाने से, राग के स्वरुप की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे, उन्हें भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे तथा क्रियात्मक रूप से बिहाग राग के सरगम गीतों/स्वरमालिका को गा सकेंगे।

3.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- बिहाग राग के क्रियात्मक स्वरूप की जानकारी प्रदान करना।
- बिहाग राग के सरगम गीत/स्वरमालिका को गाने की क्षमता विकसित करना।
- बिहाग राग के सरगम गीत/स्वरमालिका को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी, गायन के अंतर्गत, बिहाग राग के क्रियात्मक स्वरूप के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी, गायन के अंतर्गत, बिहाग राग के सरगम गीत/स्वरमालिका को लिखने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी, गायन के अंतर्गत, बिहाग राग के सरगम गीत/स्वरमालिका को गाने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी, गायन के अंतर्गत, कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास होगा।
- विद्यार्थी में, गायन के अंतर्गत, बिहाग राग के सरगम गीत/स्वरमालिका से, संगीत के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

3.3 बिहाग राग का परिचय तथा सरगम गीत/स्वरमालिका (गायन के संदर्भ में)

3.3.1 बिहाग राग का परिचय

राग - बिहाग

थाट – बिलावल

जाति - औडव-संपूर्ण

वादी - गंधार

संवादी - निषाद

स्वर - दोनों मध्यम, शेष स्वर शुद्ध

वर्जित - आरोह में रिषभ तथा धैवत

समय - रात्रि का दूसरा प्रहर

आरोह – ऩि सा ग, म प, नि सां

अवरोह - सां नि ध प, मं प ग म ग, रे सा

पकड़ - प, मं प ग म ग, रे सा

राग बिहाग बिलावल थाट का एक राग है। इसके आरोह में रिषभ तथा धैवत वर्जित हैं। इसकी जाति औडव संपूर्ण है। बिहाग का वादी स्वर गंधार तथा संवादी स्वर निषाद है। इस राग में दोनों मध्यम प्रयुक्त होते हैं। इसका समय रात्रि का दूसरा प्रहर माना गया है। बिहाग का आरम्भ षड्ज की अपेक्षा मंद्र निषाद में किया जाता है तथा रिषभ आरोह में वर्जित रहता है, जैसे. ऩि सा ग म। इसके आरोह में शुद्ध मध्यम का प्रयोग किया जाता है। तीव्र मध्यम का प्रयोग अवरोह में केवल पंचम की सहायता से किया जाता है जैसे - सां नि ध प, मं प, ग म ग या मं प ग म ग। बिहाग के अवरोह में रिषभ तथा धैवत स्वर अल्प हैं इसलिए अवरोह करते समय पहले गंधार तथा निषाद पर रूका जाता है। फिर रिषभ तथा धैवत का स्पर्श करते हुए षड्ज तथा पंचम पर आते हैं, जैसे . सां नि, प, मं प ग म ग, सा। बिहाग में मं प ग म ग, रे सा अवरोह में किया जाता है। मं प करने के बाद ग म ग करते हुए गंधार पर रूकते हैं फिर रे सा करते हैं।

3.3.2 बिहाग राग के अलंकार

- नि सा ग म प नि सां

  सां नि ध प मं प ग म रे सां

- ऩिसा साग गम मंप पनी निसां

  सांनी निध धप मंप मग रेसा

- सासा गग मम पप निनी सांसां

  सांसां निनि धध पप मंमं पप मम गग रेरे सासा

- सानी गसा मग पम निप सांनी

  निसां पनी मंप मग गसा निसा

- निग साम गप गनी पसां

  सांप निम पम मसां गनी

- साम गप मनी पसां निग

  गनी सांप नीम पग मसा

- साप गनी मसा पग

  गप साम निग पसां

- गग मम पप निनी सासा गग मम पप

  पप मम गग सासा नीनी पप मम गग

- निसाग सागम गमप मपनी पनीसा

  सनीप निपम पम मगसा गासानी

- सासासा गगग ममम पपप निनिनी सासासा

  सासासा निनिनी धधध पपप ममम गगग रेरेरे सासासा

- गगग पपप ममम निनिनी पपप सासासा

  सासासा निनिनी पपप ममम निनिनी पपप ममम गगग

- निसासा सागग गमन मपप पनीनी निससा सागग

  गसासा सानीनी निपप पमम मगग गसासा सानिनि

- सागसा गमग मपम पनीप निसानी सनिसा

सानिसा निसानी धनिध पनीप मपम गमग सागसा

- गसानी मगसा पमग निपम सानीप

  पनिसा मपानी गमप सागम निसानी

- सागनी गमसा मपग पनीम निसाप

  पनिसा मपनी गमप सागम नीसग

- गानिसा मसाग पमग नीपम सापनी

  निसाप पनिम मपग सागस सगनी

- निगम सामप गपनी मनीसा पसाग

  गसाप सानिम निपग पमसा मगनी

- निनिसा नीसाग सासाग सासाम गगम गमप ममप मपनी पपनी

  पनिसा निनीसा निसाग सासाग सगम

  ममग मगसा गगसा गसनी सासनी सनीध निनिध निधप धधप धनीप पपम पमग ममग मगरे गगस गसारे रेरेसा रेसानि सासनी सानिध

- सासानी गगसा ममग पपम निनीप सासनी

  निसासा पानीनी मपप गमम सागग निसासा

- निसागम सागमप गमापनि मपनिसाग

  गसनीप सनिनिप निपपम पममग मगगसा गसासनी

- निसासाग सागगम गममप मपपनी पानीनिसा निसासाग

  गासासानी सनीनिप निपपम पममग मगगसा गसासानी

- सागसाम गमगप मपमनी पनीपसा निसानिग

  गनिसानि सापनीप निमपम पगगम मसागसा

- निसागनी सगमसा गमपग मपनिप पनीसाप

  पसानिसा निधपनी धपमध पमगप मगरेम गरेसाग रेसानिरे सनिधसा

- निसनिग सागसम गमगप मपमनी पनीपसा

  सनिसाध निधनिप धपधम पमपग मगमरे गरेगसा

- सापमग गनिपम मसानिप पगसानी निमगसा

  सगमनी निसागप पनिमासा मपनिग गमपसा

- निगसाम सामगप गपमनी मनीपसा पासानीग

  गसानिप सानिपम निपमग पमगसा मगसानी

- गनीमप मसापनी पगनीसा निमासाग

  गनिमासा सपागनी निमसाप पगनीम

- निसागमप सागमपनी गमपनिसा मपनिसाग पनीसागम

  मगसनिध गरेसानिध रेसानिधप धपमगरे पमगरेसा

- सासासासासा गगगगग मममम पपपपप निनिनिनीनि सासासासासा

गगगगग गगगगग रेरेरेरे सासासासासा नीनीनीनीध पपपपम मममग गगगगरे रेरेरेसा

- निसानिसासा सागसागग गमगमम मपमनीनी पनीपसासा सनिसाधध

  निधनीपप धापधमम पमपगग मगमरेरे गरेगसासा रेसारेनिनी

  सगसगम गमगप मपमपनी पनीपनिसा निसानिसाग गरेगरेसा रेसारेसानी सनिसनिध निधनिधप धपधपम पमपमग मगमगरे गरेगरेसा

- गसागसानी मगगसा पपमग निपनीपम सानिसनिप पनिपनिसा मपमपनी गमगप गसागसाग निसानोसाग

  निसागमपनी सागमपनिसा गमपनिसाग मपनिसागम मगरेसनी रेसानिधापम सनिधपमग निधापमपम धपमगरेसा

- सागसागमम गमगपमम मपमपनिनी पनिपनिसासा निसानिसागग गसागसानिनी सासानिपप निपनिपमम पमपमगग मगमगसासा गसगसनिनी

  मगमगसानी पपमगसा निपनिपगम सानिसानीपम गसगसनिप गसागसानीप सनिसानीपम निपनीपगम धपपमगसा मगमगसानी

- गसा मगसा पमगसा निपमगसा

  सानिपमगस गसानीधप मपमगरेसा

- सा

  सा ग सा

  सा ग म ग सा

  सा ग म प म ग सा

  सा ग म प नी प म प म ग सा

सा ग म प नि सा नी ध प म प म ग रे सा सा सा नी ध प म ग रे सा

सा - सा - सा नि ध प मं प म ग रे सा

नी - नी - नि ध प मं प म ग रे सा

ध - ध - ध प म ग म ग रे सा

प - प - - प म प म ग रे सा

3.3.2 बिहाग राग का आलाप

1 नी़ ऩी स, सा, साऩी, साग, रेऩी, साऩी, नी़ साऩी, सा, सा,

2 सा ऩी ध़ प़, प़, प़ ऩी साग, रेसा, नी़ ऩी सा, सा,

3 ऩी सा ग म ग, सा ग म म ग, ग, ग म प, प

4 सा ग म प, मं प मं प ग म ग, रेसा, सा, ऩी ऩी सा

5 ग म प नी ऽ ध प, ध मं प, मं प ग म ग, रे सा

6 ग म प नी नी सां, सां, नी सां रें सां, नी सां गं मं मं गं, रें सां

7 म म प नी नी सां रें सां, गं मं पं पं, मंं पं गं मं गं, रेंसां

8 सां नी ध प, प , मं प ग म ग, ग रेसा, ऩी ऩी सा सा

3.3.3 राग बिहाग का सरगम गीत/स्वरमालिका

राग: बिहाग **ताल: तीनताल** **लय: मध्य**

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थायी															
								नि	सा	ग	म	प	नि	सा	-
नि	-	ध	प	ग	म	ग	-								
								प	नि	सा	ग	रे	सा	नि	सा
प	म	ग	म	ग	रे	सा	सा								
								नि	सा	ग	म	प	नि	सा	-
नि	-	ध	प	ग	म	ग	-								
								प	नि	सा	ग	रे	सा	नि	सा
प	म	ग	म	ग	रे	सा	सा								
अंतरा															
								ग	म	प	नि	सां	नि	सां	सां
नि	सां	गं	रे	सां	नि	ध	प								
								प	नि	सां	नि	ध	प	म	प
ग	म	प	म	ग	रे	नि	सा								
								ग	म	प	नि	सां	नि	सां	सां
नि	सां	गं	रे	सां	नि	ध	प								
								प	नि	सां	नि	ध	प	म	प
ग	म	प	म	ग	रे	नि	सा								

स्वयं जांच अभ्यास 1

3.1 किसी राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की तालबद्ध रचना को सरगम गीत कहा जाता है।

क) सही

ख) गलत

3.2 स्वरमालिका किसे कहते हैं?

क) राग में प्रयुक्त होने वाली ताल रचना

ख) राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की ताल रहित रचना

ग) राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की तालबद्ध रचना

घ) राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की काव्य रचना

3.3 बिहाग राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) सा

ख) ग

ग) म

घ) प

3.4 बिहाग राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) नी

ख) ग

ग) म

घ) प

3.5 बिहाग राग में गांधार स्वर कोमल होता है।

क) हां

ख) नहीं

3.6 बिहाग राग के सरगम गीत/स्वरमालिका में ऋषभ का प्रयोग होता है।

क) सही

ख) गलत

3.7 बिहाग राग में मध्यम स्वर विकृत नहीं होता है।

क) सही

ख) गलत

3.8 बिहाग राग का गायन/वादन समय क्या है?

क) रात्रि का दूसरा प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) रात्रि का चौथा प्रहर

घ) दोपहर

3.9 बिहाग राग में ऩी सा ग मप प स्वर संगति लगती है।

क) सही

ख) गलत

3.10 बिहाग राग की जाति क्या है?

क) औढव-औढव।

ख) सम्पूर्ण-षाड़व।

ग) षाड़व-षाड़व।

घ) औढव -सम्पूर्ण।

3.4 सारांश

किसी राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की तालबद्ध रचना को सरगम गीत कहा जाता है। इसे स्वरमालिका भी कहते हैं। इससे स्वर-ज्ञान के साथ-साथ लय तथा राग के स्वरुप को जानने में वृद्धि होती है। इससे विद्यार्थियों में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास संभव होता है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा रागों के चलन को जानने के लिए सरगम गीत/स्वरमालिका का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है।

3.5 शब्दावली

- सरगम गीत: किसी राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की तालबद्ध रचना को सरगम गीत कहा जाता है।
- स्वरमालिका: किसी राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की (स्वरों की माला) तालबद्ध रचना को स्वरमालिका कहा जाता है।
- शास्त्रीय संगीत: शास्त्रीय संगीत वह संगीत है जो नियमों से बंधा होता है।

3.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

3.1 उत्तर: क)

3.2 उत्तर: ग)

3.3 उत्तर: ख)

3.4 उत्तर: क)

3.5 उत्तर: ख)

3.6 उत्तर: क)

3.7 उत्तर: ख)

3.8 उत्तर: क)

3.9 उत्तर: क)

3.10 उत्तर: घ)

3.7 संदर्भ

डॉ. केशव शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, मार्च 2024।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

3.8 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

3.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग बिहाग का सरगम गीत/स्वरमालिका लिखिए।

प्रश्न 2. राग बिहाग का परिचय लिखिए।

प्रश्न 3. राग बिहाग के सरगम गीत को गाकर सुनाइए।

प्रश्न 4. राग बिहाग के आलाप को गाकर सुनाइए।

प्रश्न 5. राग बिहाग के आलाप को लिखिए।

इकाई-4
यमन राग का द्रुत ख्याल/लक्षणगीत
(गायन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
4.1	भूमिका
4.2	उद्देश्य तथा परिणाम
4.3	राग यमन
4.3.1	यमन राग का परिचय
4.3.2	यमन राग का आलाप
4.3.3	यमन राग का द्रुत ख्याल/लक्षणगीत 1
4.3.4	यमन राग का द्रुत ख्याल/लक्षणगीत 2
4.3.5	यमन राग की तानें
	स्वयं जांच अभ्यास 1
4.4	सारांश
4.5	शब्दावली
4.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
4.7	संदर्भ
4.8	अनुशंसित पठन
4.9	पाठगत प्रश्न

4.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA104PR की यह चौथी इकाई है। इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग यमन का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल (द्रुत ख्याल) तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग यमन के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग यमन का आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को गा सकेंगे।

4.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- यमन राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- यमन राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- यमन राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- यमन राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

- यमन राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- राग यमन के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

4.3 राग यमन

4.3.1 यमन राग का परिचय

प्रथम पहर निशि गाइये ग नि को कर संवाद।

जाति संपूर्ण तीवर मध्यम यमन आश्रय राग ॥

राग - यमन

थाट - कल्याण

जाति - सम्पूर्ण-सम्पूर्ण।

स्वर – मध्यम तीव्र (मं)

वादी - ग

सम्वादी - नि

गायन वादन समय - रात्रि का प्रथम पहर

न्यास के स्वर - ग, प, नि।

समप्रकृतिक राग - यमन कल्याण।

आरोह - ऩि रे ग, मं प, मं ध नि रें सां।

अवरोह - सां नि ध प मं ध प मं ग रे ऩि रे सा।

पकड़ - ऩि ध़ ऩि रे ग, रे सा, ऩि रे ग म॑ प, प रे ग, रे ऩि रे सा।

इस राग के दो नाम हैं यमन अथवा कल्याण। कुछ लोग इसे ईमन भी कहते हैं, किन्तु कल्याण इसका प्राचीन नाम है। यह कल्याण राग का आश्रय राग भी हैं, अर्थात इसके नाम पर ही इसके थाट का नाम भी है। इस राग की चलन अधिकतर मंद्र ऩि से प्रारंभ होती है, तथा तीनो सप्तकों में होती है। इसमें ऩि रे ग और प रे स्वर-समूह बार-बार प्रयोग किये जाते हैं। इस राग की प्रकृति गंभीर है, इसमें बड़ा और छोटा ख्याल, तराना, ध्रुपद तथा मसीतखानी और रजाखानी गतें सभी सामान्य रूप से गाई बजाई जाती है। इस राग में सा, रे, ग, प, और नि स्वरों पर न्यास करते हैं।

4.3.2 यमन राग का आलाप

- सा, ऩी सा, ऩी रे सा, ऩी सा ऩी ऩी रे सा, ऩी ध़ ऩी ऩी सा।
- सा़ ऩी ध़ प़, ऩी ध़ ऩी ऩी सा, ऩी रे सा, रे ऩी ध़ प़,
  म़॑ ध़ प़, म़॑ ध़ ऩी रे सा सा।
- ऩी रे ग, रे ग, रे सा ऩी रे सा, म़॑ ध़ ऩी रे ग, रे ग, रे सा
- ऩी रे, ग म॑ म॑ प, प, म॑ ग, रे ग म॑, म॑ ग रे सा
- ग म॑ प, प, म॑ ध प, प, म॑ ध नी नी ध प, प,
  म॑ ध नी नी रें सां, सां
- नी रें गं, रें गं, रें सां नी रें सां, नी रें, गं मं गं,
  रें गं, गं रें सां
- रें नी ध प, प, म॑ ध प म॑ ग, रे म॑ ग रे ऩी रे सा

4.3.3 यमन राग का द्रुत ख्याल/लक्षण गीत 1

राग: यमन **ताल: तीनताल** **लय: मध्य**

स्थाई- श्याम बजाये आज मुरलिया,

धुन सुन मैं हो गयी रे बांवरिया।

अंतरा- मुरली बजावत धेनु चरावत,

कितहूँ छिप गये आज सांवरिया।

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
X				2				0				3			
स्थायी															
								ग	रे	ग	रे	नि़	रे	सा	सा
								श्या	ऽ	म	ब	जा	ऽ	व	त
नि़	ध़	नि़	रे	गग	रे	ग	ऽ								
आ	ऽ	ज्	मु	र	ऽ	ली	या								
								म॑	ध	म॑	ध	म॑ध	निसां	सां	सां
								धु	न	सु	न	मैंऽ	ऽ	हो	ऽ
नि	ध	प	प	पम॑	गरे	ग	ग								
ग	ई	रे	बा	व ऽ	रीऽ	या	ऽ								
अंतरा															
								म॑	ध	म॑	ध	म॑ध	निसां	सां	सां
								मु	र	ली	ब	जाऽ	ऽऽ	व	त
नि	रें	गं	रें	सांनि	रें	सां	सां								
धे	ऽ	नु	च	राऽ	ऽ	व	त								
								नि	नि	नि	सां	नि	निध	प	प
								कि	त	हूँ	ऽ	छि	पऽ	ग	ये
म॑	म॑	प	प	पम॑	गरे	ग	ग								
आ	ऽ	ज्	सां	वऽ	रिऽ	या	ऽ								

4.3.4 राग यमन का द्रुत ख्याल/लक्षण गीत 2

राग: यमन **ताल: एक ताल** **लय: मध्य**

स्थायी

सब गुणी जन इमन गात

तीवर सुर करत साथ

सासा रेरे गग म॑म॑ पप धध नीनी

रेंरें गरें सांरें सांनी धप

अंतरा

सुर वादी गंधार साध

सम वादी कर निखाद

रात समय प्रथम प्रहर

चतुर सुजन मन रिझात

x		0		2		0		3		4	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
स्थायी											
[प]सां	सां	नी	[ध]नी	[ध]म॑	प	[म॑]प	प	म॑	ग	-	ग
स	ब	गु	नी	ज	न	इ	म	न	गा	-	त
[म॑]ग	-	ग	रे	ग	प	[ग]रे	ग	रे	[रे]ऩी	रे	सा
ती	-	व	र	सु	र	क	र	त	सा	-	थ
सा	सा	रे	रे	ग	ग	म॑	म॑	प	प	ध	ध
नी	नी	रें	रें	गं	रें	[नी]सां	रें	सां	नी	ध	प

x		0		2		0		3		4	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
अंतरा											
[म॑]प	ग	प	-	ध	प	[प]सां	-	सां	सां	-	सां
सु	र	वा	-	दी	गं	धा	-	र	सा	-	ध
[नी]सां	सां	रें	-	गं	रें	सां	सां	नी	[ध]नी	ध	प
स	म	वा	-	दी	-	क	र	नि	खा	-	द
प	ग	ग	प	प	प	[प]नी	नी	ध	न	ध	प
रा	-	त	स	म	य	प्र	थ	म	प्र	ह	र
सां	सं	नी	[ध]नी	म॑	प	प	ग	प	[ग]रे	-	सा
च	तु	र	सु	ज	न	म	न	रि	झा	-	त
स्थायी											
[प]सां	सां	नी	[ध]नी	[ध]म॑	प	[म॑]प	प	म॑	ग	-	ग
स	ब	गु	नी	ज	न	इ	म	न	गा	-	त
[म॑]ग	-	ग	रे	ग	प	[ग]रे	ग	रे	[रे]ऩी	रे	सा
ती	-	व	र	सु	र	क	र	त	सा	-	थ
सा	सा	रे	रे	ग	ग	म॑	म॑	प	प	ध	ध
नी	नी	रें	रें	गं	रें	[नी]सां	रें	सां	नी	ध	प

4.3.5 यमन की तानें

- खाली से सम तक –

    ऩिरे गरे ग- ऩिरे गरे ग- ऩिरे गरे

- सम से सम तक –

    ऩिरे गरे ग- ग- ग- -- ऩिरे गरे ग- ग- -- ऩिरे गरे ग- ग-

- सम से सम तक –

    ऩिध़ ऩिरे गरे ऩिरे ग- -- ऩिध़ ऩीरे गरे ऩिरे ग- -- ऩिध़ ऩिरे गरे ऩिरे

- गत से सम तक –

    सांनि धप मंग रेसा ऩिरे गरे ग- सांनि धप मंग रेसा

    ऩिरे गरे ग- सांनि धप मंग रेसा ऩिरे गरे

- सम से सम तक –

    ऩिसा रेऩि सारे ऩिसा मंप धमं पध मंप निसां

    रेंनि सारें ऩिसां गंगं रेंसां निसां रेंसां

- सम से सम तक –

    निनि धप मंप धप मंप गमं गरे सा- ऩिरे गरे

    ग- ऩिरे गरे ग- ऩिरे गरे

- सम से सम तक –

    गग रेसा ऩिसा रेसा ऩिऩि ध़प़ म़ंप़ ध़प़

म॒ध॒ ऩिरे सासा ऩिसा ऩिरे गमं पमं गमं

- सम से सम तक –

  मंध निरें सांसां निसां गरें सारें धनि धप धप मंप

  मंग मंग रेग रेसा ऩिरे गमं पमं गमं ग- -- ऩिरे

  गमं पमं गमं ग- -- ऩिरे गमं पमं गमं

- सम से सम तक –

  ऩिरे सासा ऩिरे गरे सासा ऩिरे गमं गरे सासा ऩिरे गमं

  पमं गमं गरे सासा ऩिरे गमं धप मंप गमं गरे सासा

  ऩिरे गमं धनि रेंसां सांनि धनि धप मंप मंप मंग रेसा

  ऩिसा ऩिरे ग- -ऩिरे ग- -ऩिरे

- ऩिरे गरे ऩिरे सासा पमं गरे ऩिरे सासा
- ऩिरे गरे गमं गमं पमं गरे ऩिरे सासा
- ऩिरे गरे पध पमं गमं पमं गरे सा-
- ऩिरे गमं धनि सांनि धप मंग रेरे ऩिसा
- गमं धनि रेंगं रेंसां निध पमं गरे साऽ
- सांनि धप मंग रेसा ऩिरे गमं धनि सांऽ
- ऩिरे गरे गमं गमं धमं धनि धनि सांऽ

•	निरें	गरें	सारें	सांनि	धप	म॑ध	निरें	सांऽ
•	गग	रेसा	ऩीसा	रेसा	ऩीऩी	ध़प़	म़॑प़	ध़प़
	म़॑ध़	ऩीरे	सासा	ऩीसा	नीरे	गम॑	पम॑	गम॑
	गम॑	धनी	सांनी	धप	म॑ध	नीरें	गरें	सांसां
	नीरें	सांनी	धप	म॑प	म॑ध	पम॑	गरे	सासा
	ऩीरे	गम॑	पम॑	गरे	साऽ	पम॑	गरे	साऽ
	पम॑	गरे	साऽ	ऩीरे	गम॑	पम॑	गरे	साऽ
	पम॑	गरे	साऽ	पम॑	गरे	साऽ	ऩीरे	गम॑
	पम॑	गरे	साऽ	पम॑	गरे	साऽ	पम॑	गरे

स्वयं जांच अभ्यास 1

4.1 यमन राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) ध

घ) ग

4.2 यमन राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) प

घ) ग

4.3 यमन राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) मध्य रात्रि

घ) दोपहर

4.4 यमन राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) गंधार

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) कोई भी नहीं

4.5 यमन राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) ग

ख) प

ग) म॑

घ) सा

4.6 यमन राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) आसावरी

ग) विलावल

घ) तोड़ी

4.7 यमन राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) ध नि ध प, म॑ ग

ख) ध सां नि ध प, म॑ ग

ग) ध नि ध प म॑ प ध नी

घ) ध नि सां रें नी ध प, म॑ ग

4.8 यमन राग की द्रुत ख्याल/लक्षण गीत में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

4.9 यमन राग की द्रुत ख्याल/लक्षण गीत को केवल तीनताल में ही गाया जाता है।

क) हां

ख) नहीं

4.10 यमन राग, विलावल तथा अल्हैया रागों का मिश्रण है।

क) सही

ख) गलत

4.4 सारांश

यमन राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत की गायन विधा के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। यमन राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में द्रुत ख्याल/लक्षण गीत (छोटा ख्याल), मध्य तथा तेज लय में गाया जाता है। द्रुत ख्याल/लक्षण गीत में तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ गाया जाता है।

4.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप से राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।

- छोटा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा मध्य या द्रुत लय में गाई जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।
- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

4.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

4.1 उत्तर: ग)

4.2 उत्तर: घ)

4.3 उत्तर: क)

4.4 उत्तर: घ)

4.5 उत्तर: ग)

4.6 उत्तर: ग)

4.7 उत्तर: क)

4.8 उत्तर: ग)

4.9 उत्तर: ख)

4.10 उत्तर: ख)

4.7 संदर्भ

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

4.8 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

4.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग यमन का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग यमन का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग यमन के छोटा ख्याल को लिखिए।

प्रश्न 4. राग यमन के छोटे ख्याल की पांच तानों को लिखिए।

प्रश्न 5. राग यमन के आलाप को गाकर सुनाइए।

प्रश्न 6. राग यमन के छोटा ख्याल को गाकर सुनाइए।

इकाई-5
भूपाली राग का द्रुत ख्याल/लक्षणगीत (गायन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
5.1	भूमिका
5.2	उद्देश्य तथा परिणाम
5.3	राग भूपाली
5.3.1	भूपाली राग का परिचय
5.3.2	भूपाली राग का आलाप
5.3.3	भूपाली राग का द्रुत ख्याल/लक्षणगीत 1
5.3.4	भूपाली राग का द्रुत ख्याल/लक्षणगीत 2
5.3.5	भूपाली राग की तानें
	स्वयं जांच अभ्यास 1
5.4	सारांश
5.5	शब्दावली
5.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
5.7	संदर्भ
5.8	अनुशंसित पठन
5.9	पाठगत प्रश्न

5.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA104PR की यह पांचवीं इकाई है। इस इकाई में गायन के संदर्भ में, राग भूपाली का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल (द्रुत ख्याल) तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग भूपाली के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग भूपाली का आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को गा सकेंगे।

5.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- भूपाली राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- भूपाली राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- भूपाली राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- भूपाली राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

- भूपाली राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- राग भूपाली के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

5.3 राग भूपाली

5.3.1 भूपाली राग का परिचय

राग- भूपाली

थाट- कल्याण

जाति- औडव-औडव

वादी- गंधार

संवादी- धैवत

स्वर - सभी शुद्ध

वर्जित- मध्यम तथा निषाद

समय - रात्रि का प्रथम प्रहर

समप्रकृतिक राग - देशकार, शुद्ध कल्याण

आरोह- सा रे ग, प ध सां

अवरोह- सां ध प ग रे सा

पकड़ - ग, रे सा ध़, सा रे ग, प ग, ध प ग, रे सा।

भूपाली कल्याण थाट का राग माना जाता है। इसकी जाति औडव-औडव है, इस राग में मध्यम तथा निषाद का प्रयोग नहीं किया जाता है। भूपाली का वादी स्वर गंधार तथा संवादी स्वर धैवत माना गया है। इस राग को गाने-बजाने का समय रात्रि का प्रथम प्रहर माना गया है। इसके समप्रकृतिक रागों का नाम देशकार तथा शुद्ध कल्याण है। भूपाली एक अत्यन्त लोकप्रिय राग है। इस राग में ध्रुपद, धमार, ख्याल आदि की अनेक मधुर रचनाएं उपलब्ध है। इसके साथ-साथ गीत, गज़ल, भजन, फिल्मी गीत आदि में इस राग पर आधारित रचनाएं सुनने को मिलती हैं।

भूपाली राग की अधिकतर रचनाओं में गंधार स्वर पर सम का स्थान रहता है। कुछ रचनाओं में षड्ज पर भी सम देखा गया है। गंधार के साथ-साथ रिषभ तथा पंचम स्वर प्रमुख है। आलाप आदि करते समय ध़ रे, सा इस स्वर संगति का प्रयोग करते हुए आलाप के टुकड़ों का अंत किया जाता है, जैसे सा, ध़ सा रे ग, रे सा, ध़ रे सा आदि। भूपाली राग में स्वरों का विस्तार करते समय सा ध़ सा। ध़ रे सा, प ग, रे स्वर संगतियों का बार-बार प्रयोग किया जाता है।

भूपाली राग में मध्यम तथा निषाद के वर्जित रहने से इसकी जाति औडव-औडव है। गंधार स्वर के वादी होने के कारण इस पर पूर्ण न्यास किया जाता है, जैसे ध़ सा रे ग, ग प ग रे ग, सा ध़ सा रे ग, रे ग प ग, रे, ग रे सा।

भूपाली राग का समप्रकृतिक राग देशकार है। भूपाली तथा देशकार दोनों रागों में एक जैसे स्वर लगते हैं- सा रे ग प ध सां, सा ध प ग रे सा। परन्तु स्वरों के एक जैसा होने के साथ-साथ दोनों रागों का चलन अलग अलग है। जिससे इन दोनों में अंतर स्पष्ट रूप से पहचाना जा सकता है। भूपाली राग में हम गंधार तथा पंचम पर न्यास करते हैं। जबकि देशकार राग में हम पंचम तथा धैवत पर न्यास किया जाता है देशकार में गंधार पर कभी नहीं रूकते हैं।

शुद्ध कल्याण राग भी भूपाली का समप्रकृतिक राग माना जाता है। दोनों रागों में ग प ध प, प ग की संगति की जाती है तथा गंधार तथा धैवत क्रमशः वादी संवादी हैं। इसके अतिरिक्त दोनों का आरोह भी एक जैसा है। अंतर की दृष्टि से शुद्ध कल्याण में प रे की संगति बार-बार प्रयुक्त होती है पर भूपाली में यह संगति नहीं ली जाती। इसके अतिरिक्त अवरोह करते समय शुद्ध कल्याण में निषाद का प्रयोग किया जाता है। भूपाली में निषाद वर्जित रहने से, अवरोह करते समय दोनों रागों का अंतर स्पष्ट हो जाता है।

5.3.2 भूपाली राग का आलाप

- ध़, सा ध़ सा, सा रे ग, रे सा, ग रे सा, ध़, सा, सा रे ग, रे सा।
- सा रे ग, सा रे सा, ग, रे सा, सा ग, प ग, रे ग, ध़,
  सा रे सा ग प ग, ध प ग प ध प, रे ग, रे सा।
- सा ध़ प़ सा, रे सा, सा रे ग, ध सा, रे ग, सा, प़ ध़ सा रे ग,
  प ग, ध प ग,रे ग प ग, रे ग रे सा।
- सा रे ग प, ग रे, ध प, ग प ग रे, सा रे ग रे, सा रे ध़ सा,
  सा ध़ सा प़ ध़ सा, प़ ध़ प़ सा ग रे सा।
- सा रे ग रे ग प, ध प, ग प, ग रे, सा रे ग रे, ग प ध प,
  ग रे सा रे ध सां।
- सा रे ग प ध ग, रे ग, रे ग, प ग, ग प ध सां, सां ध प,
  ग रे ग प ध प ग, रे ग रे सा रे सा ध़ सा रे ग रे ग,
  प ग, ध सां गं रें सां ध, प ग, रे सा।

5.3.3 भूपाली राग का द्रुत ख्याल/लक्षण गीत 1

राग: भूपाली **ताल: तीनताल** **लय: मध्य**

स्थाई:

जाऊँ तोरे चरण कमल पर वारी

हे गोपाल गोविन्द मुरारी

शरणागत हूँ द्वार तिहारी

अन्तरा:

अनगिन दुरत भयो हूँ जड़मत

किस विधि पाऊँ चतुर तुमरे पद

तुम ही जग के एक आधार

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई															
				ग	ग	ध	प	ग	रे	ग	रे	सा	ध	सा	रे
प	ग	-	ग												
				जा	ऊँ	तो	रे	च	र	ण	क	म	ल	प	र
वा	ऽ	ऽ	री												
				ग	प	ध	रे	सा	-	सा	सा	सा	रे	सा	रे
सा	ध	प	ग												
				हे	ऽ	गो	ऽ	पा	ऽ	ल	गो	वि	ऽ	न्द	मु
रा	ऽ	ऽ	री												

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
				सा	सा	ग	रे	ध	ध	सा	-	प	ध	रे	सा
ध	प	ग	ग	श	र	णा	s	ग	त	हूँ	s	द्वा	s	र	ति
हा	s	s	री												

अन्तरा

				ग	ग	ग	ग	प	प	सा	ध	सा	-	सा	-
सा	रे	सा	सा	अ	न	गि	न	दु	र	त	भ	यो	s	हूँ	s
ज	ड़	म	त												
				ध	ध	ध	ध	सा	-	सा	सा	सा	रे	सा	रे
सा	-	ध	पग	कि	स	वि	धि	पा	s	ऊँ	च	तु	र	तु	म
रे	s	प	दs												
				सा	सा	ग	रे	ध	ध	सा	-	प	ध	रे	सा
ध	प	ग	ग	तु	म	ही	s	ज	ग	के	s	ए	s	क	आ
धा	s	s	र												

5.3.4 भूपाली राग का द्रुत ख्याल/लक्षण गीत 2

राग: भूपाली **ताल: तीनताल** **लय: द्रुत**

स्थाई:

इतना जोबन पर मान न करिए

डरिये प्रभु सो आज आली

अन्तरा :

जो कोई आवे अपने डिंगवा

ता सो गरब न कीजिये

सदारंग यह रीत माने

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई															
								सां	सां	ध	प	ग	रे	सा	सा
प	ग	प	प	प	ध	^{प}ध	–								
								इ	त	ना	जो	ब	न	प	र
मा	ऽ	न	न	क	रि	ए	ऽ								
								^{प}ग	ग	ग	रे	^{प}ग	प	$^{सां}$ध	सां
सां	ध	सां	सां	सांसां	धप	गरे	सा								
								ड	रि	ये	ऽ	प्र	भु	सो	ऽ
आ	ऽ	ऽ	ज	आऽ	ऽऽ	ऽऽ	ली								

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
अन्तरा															
सां	रें	सां	-	$^{\text{प}}$ग	-	ग	ग	प	-	सां	ध	सां	सां	सां	-
डिं	ग	वा	s	जो	s	को	ई	आ	s	वे	s	अ	प	ने	s
$^{\text{ध}}$सां	(सां)	ध	प	ध	-	ध	-	सां	सां	रें	रें	सां	रें	गं	रें
ये	s	s	s	ता	s	सो	s	ग	र	ब	न	की	s	s	जि
सांसां	धप	गरे	सा	प	ग	रे	ग	$^{\text{सां}}$प	ध	सां	सां	प	ध	सां	सां
माs	ss	ss	ने	स	दा	s	रं	s	ग	य	ह	री	s	s	त
स्थाई															
प	ग	प	प	प	ध	$^{\text{प}}$ध	–	सां	सां	ध	प	ग	रे	सा	सा
मा	s	न	न	क	रि	ए	s	इ	त	ना	जो	ब	न	प	र

5.3.5 भूपाली राग की तानें

1 – 8 मात्रा

- सारे गप धसां धप गप धप गरे सा-
- सारे गप धसां धप सांसां धप गरे सा-
- सारे गरे गप धप धसां धप गरे सा-
- गप धप रेंसां धप सांसां धप गरे सा-

सम से सम तक

- सांसां धप गरे सासा गप धप धध सा-

  गप धसां रेंसां धप गप धप धध सा-
- सारे गरे सासा धप गप धप धध सा-

  गंगं रेंसां रेंरें साध सांसां धप धध सा-
- ध़सा रेग रेसा ध़सा गग रेसा पप गरे

  धध पप सांसां धध गग रेरे गग सासा

5वीं मात्रा से –

- सासा रेरे गग पप धध सांसां सांसां धध पप गग रेरे सासा
- सारे गप गप धप धप गरे सारे गरे गप धप गरे सा-

- सारे गग रेग पप गप धध पध सांसां सारें सां-
- सारे गप गप धप धप गरे सारे गरे गप धप गरे सा-
- सारे गग रेग पप गप धध पध सांसां

  धध सांसां सारें सा-

7वीं मात्रा से

- सारे सारे ग- रेग रेग प- गप गप ध- सारे सारे

  ग- रेग रेग प- गप गप ध- सारे सारे ग-

  रेग रेग प- गप गप ध-

9वीं मात्रा से

- सारे गप धसां रेंगं रेंसां धप गप धसां
- गंगं रेंसां रेंरें सांध सांसां धप धध पग
- गप धध पध सांसां सांसां धप गरे सा-
- सारे गसा रेग सारे गग रेरे सासा ध़ध़
- सारे गरे सारे गप गरे सारे गप धप
- गरे सारे गप धसां धप गरे सारे गप
- धसां रेंसां धप धसां रेंसां धप साध़ साध़
- पग रेसा ध़सा रेग ध़सा रेग ध़सा रेग

सम से सम तक

- गंगं रेंरें सांसां धप धप गप गरे सारे गप धप

  गरे सासा सारे गसा रेग सारे

7वीं मात्रा से सम तक

- प़ध़ सासा ध़सा रेरे सारे गग रेग पप

  गप धध पध सांसां धसां धप गरे सा-

  गरे साध़ प़ध़ सारे ग- -- गरे साध़

  प़ध़ सारे ग- -- गरे साध़ प़ध़ सारे

स्वयं जांच अभ्यास 1

5.1 भूपाली राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) प

घ) ग

5.2 भूपाली राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) म

ख) नि

ग) प

घ) रे

5.3 भूपाली राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) रात्रि का दूसरा प्रहर

घ) दोपहर

5.4 भूपाली राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) गंधार

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) कोई भी नहीं

5.5 भूपाली राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) ग

ख) प

ग) म

घ) कोई भी नहीं

5.6 भूपाली राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) आसावरी

ग) भूपाली

घ) तोड़ी

5.7 भूपाली राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) नि ध प, म ग

ख) ध सां नि ध प, म ग

ग) ध नि ध प म ग प ध नी

घ) ध नि सां रें नी ध प, म ग

5.8 भूपाली राग की द्रुत ख्याल/लक्षण गीत में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

5.9 भूपाली राग की द्रुत ख्याल/लक्षण गीत को केवल तीनताल में ही गाया जाता है।

क) हां

ख) नहीं

5.10 भूपाली राग, कल्याण तथा कामोद रागों का मिश्रण है।

क) सही

ख) गलत

5.4 सारांश

भूपाली राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत की गायन विधा के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। भूपाली राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में द्रुत ख्याल/लक्षण गीत (छोटा ख्याल), मध्य तथा तेज लय में गाया जाता है। द्रुत ख्याल/लक्षण गीत में तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ गाया जाता है।

5.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- छोटा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा मध्य या द्रुत लय में गाई जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।
- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।

- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को ‘लय’ कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

5.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

5.1 उत्तर: ग)

5.2 उत्तर: घ)

5.3 उत्तर: ग)

5.4 उत्तर: क)

5.5 उत्तर: घ)

5.6 उत्तर: ग)

5.7 उत्तर: क)

5.8 उत्तर: ग)

5.9 उत्तर: ख)

5.10 उत्तर: ख)

5.7 संदर्भ

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

5.8 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

5.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग भूपाली का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग भूपाली का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग भूपाली के छोटा ख्याल को लिखिए।

प्रश्न 4. राग भूपाली के छोटे ख्याल की पांच तानों को लिखिए।

इकाई-6
बिहाग राग का द्रुत ख्याल/लक्षण गीत
(गायन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
6.1	भूमिका
6.2	उद्देश्य तथा परिणाम
6.3	राग बिहाग
6.3.1	बिहाग राग का परिचय
6.3.2	बिहाग राग का आलाप
6.3.3	बिहाग राग का द्रुत ख्याल/लक्षणगीत
6.3.4	बिहाग राग की तानें
	स्वयं जांच अभ्यास 1
6.4	सारांश
6.5	शब्दावली
6.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
6.7	संदर्भ
6.8	अनुशंसित पठन
6.9	पाठगत प्रश्न

6.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA104PR की यह छटी इकाई है। इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग बिहाग का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल (द्रुत ख्याल) तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग बिहाग के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग बिहाग का आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को गा सकेंगे।

6.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- बिहाग राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- बिहाग राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- बिहाग राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- बिहाग राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

- बिहाग राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- राग बिहाग के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

6.3 राग बिहाग

6.3.1 बिहाग राग का परिचय

राग - बिहाग

थाट – बिलावल

जाति - औडव-संपूर्ण

वादी - गंधार

संवादी - निषाद

स्वर - दोनों मध्यम, शेष स्वर शुद्ध

वर्जित - आरोह में रिषभ तथा धैवत

समय - रात्रि का दूसरा प्रहर

आरोह – ऩि सा ग, म प, नि सां

अवरोह - सां नि ध प, म प ग म ग, रे सा

पकड़ - प, म प ग म ग, रे सा

राग बिहाग बिलावल थाट का एक राग है। इसके आरोह में रिषभ तथा धैवत वर्जित हैं। इसकी जाति औडव संपूर्ण है। बिहाग का वादी स्वर गंधार तथा संवादी स्वर निषाद है। इस राग में दोनों मध्यम प्रयुक्त होते हैंए इसका समय रात्रि का

दूसरा प्रहर माना गया है। बिहाग का आरम्भ षड्ज की अपेक्षा मंद्र निषाद में किया जाता है तथा रिषभ आरोह में वर्जित रहता है, जैसे. ऩि सा ग म। इसके आरोह में शुद्ध मध्यम का प्रयोग किया जाता है। तीव्र मध्यम का प्रयोग अवरोह में केवल पंचम की सहायता से किया जाता है जैसे - सां नि ध प, म प, ग म ग या म प ग म ग। बिहाग के अवरोह में रिषभ तथा धैवत स्वर अल्प हैं इसलिए अवरोह करते समय पहले गंधार तथा निषाद पर रूका जाता है। फिर रिषभ तथा धैवत का स्पर्श करते हुए षड्ज तथा पंचम पर आते हैं, जैसे सां नि, प, म प ग म ग, सा। बिहाग में म प ग म ग, रे सा अवरोह में किया जाता है। म प करने के बाद ग म ग करते हुए गंधार पर रूकते हैं फिर रे सा करते हैं।

6.3.2 बिहाग राग का आलाप

1 ऩी ऩी स, सा, सा ऩी, सा ग, रे ऩी, सा ऩी,

ऩी सा ऩी, सा, सा,

2 सा ऩी ध़ प़, प़, प़ ऩी सा ग, रेसा, ऩी ऩी सा, सा,

3 ऩी सा ग म ग, सा ग म म ग, ग, ग म प, प

4 सा ग म प, मं प मं प ग म ग, रेसा,

सा, ऩी ऩी सा

5 ग म प नी ऽ ध प, ध मं प, मं प

ग म ग, रे सा

6 ग म प नी नी सां, सां, नी सां रें सां,

नी सां गं मं मं गं, रें सां

7 म म प नी नी सां रें सां, गं मं पं पं,

मं पं गं मं गं, रेंसां

8 सां नी ध प, प , मं प ग म ग, ग रेसा, ऩी ऩी सा सा

6.3.3 बिहाग राग का द्रुत ख्याल/लक्षण गीत

राग बिहाग छोटा ख्याल द्रुतलय तीनताल

स्थाई

बालम रे मोरे मन के,

चिते होवन दे रे, होवन देरे मीत पियरवा।

अन्तरा

सदारंग जिन जावो, बिदेसवा सुख निंदरिया,

सोवन दे रे, सोवन दे रे मीत पियरवा।

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16

स्थाई

												ग	म	प	सां
												बा	ऽ	ल	म
नि	-	प	-	-	-	(प)	प	ग	म	ग	-				
रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मो	रे	म	न	के	ऽ				
												^{प}नि	^{ध}नि	(प)	-
												चीं	ऽ	ते	ऽ
-	-	ग	म	प	-	ग	म	ग	-	सा	-				
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	हो	ऽ	व	न	दे	ऽ	रे	ऽ				
												प़	-	नि़	नि़
												हो	ऽ	व	न
सा	-	^{म}ग	म	प	-	^{प}ग	म	ग	गरे	सा	-				
दे	ऽ	रे	ऽ	मी	ऽ	त	पि	य	रऽ	वा	ऽ				

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16

अन्तरा

												ग	ग	म	प
												स	दा	ऽ	रं
-	प	नि	नि	सां	-	सां	सां	सां	रें	सां	-				
ऽ	ग	जि	न	जा	ऽ	वो	बि	दे	स	वा	ऽ				
												सां	सां	(सां)	-
												सु	ख	नीं	ऽ
^{ध}नि	नि	(प)	-	प	-	नि	नि	सां	नि	(प)	-				
द	रि	या	ऽ	सो	ऽ	व	न	दे	ऽ	रे	ऽ				
												ग	म	प	नि
												सो	ऽ	व	न
सां	नि	प	-	प	म	ग	म	ग	ग	(सा)	-				
दे	ऽ	रे	ऽ	मी	ऽ	त	पि	य	र	वा	ऽ				

6.3.4 बिहाग की तानें

•	म॑प	गम	ग-	म॑प	गम	ग-	म॑	गम
•	गम	पनी	सांनी	धप	म॑प	गम	गरे	सा-
•	गग	रेसा	ऩीऩी	ध़प़	गंगं	रेंसां	नीनी	धप
	म॑प	गम	गरे	सासा	गम	पग	म॑प	गम
•	ऩीसा	गम	पनी	धप	मप	धप	म॑प	गम
	गरे	सासा	ऩीसा	ऩीध़	प़प़	म़॑प़	म़॑प़	ऩीसा
	रेसा	ऩीसा	ऩीसा	गग	रेसा	ऩीसा	ऩीसा	गम
	गरे	सासा	ऩीसा	गम	प-	गम	ग-	ऩीसा
	गम	प-	गम	ग-	ऩीसा	गम	प-	गम
•	म॑प	गम	ग-	--	नीनी	धप	म॑प	गम
	ग-	--	सांनी	धप	मप	नीनी	धप	म॑प
	गम	ग-	--	गम	पनी	सांरें	सांनी	धप
	म॑प	गम	गरे	सासा	ऩीऩी	सासा	गग	मम
•	प-	ऩीसा	गग	रेसा	ऩीसा	गम	पप	मग
	गम	पप	नीनी	धप	प-	नीसां	गंगं	रेंसां
	गंगं	रेंसां	नीध	पप	म॑प	गम	गरे	सा-

गम   पनी   सां-   गम   पनी   सां-   गम   पनी

- सांनी   धप   मप   नीनी   धप   म॑प   गम   रेसा

  ऩीसा   गम   गम   पसां   नी-   --   प-   प-

  गम   पसां   नी-   --   प-   प-

- ऩीसा   गम   रेसा   ऩीसा   गम   रेसा   सासा   ऩीसा

  गम   पम   गम   गरे   सासा   ऩीसा   गम   पनी

  धप   म॑प   गम   गरे   सासा   गम   पनी   सांनी

  धप   म॑प   गम   गरे   सासा   ऩीसा   ऩीसा   गम

- म॑प   गम   ग-   नीनी   धप   म॑प   गम   ग-

  सांनी   धप   मप   नीनी   धप   म॑प   गम   ग-

  गम   पनी   सांनी   धप   म॑प   गम   गरे   सा-

  ऩीसा   गम   ग-   ऩीसा   गम   ग-   ऩीसा   गम

- ऩीसा   गम   पनी   सांरें   सांनी   धप   म॑प   गम

  गरे   सासा   गम   पनी   सांगं   रेंसां   नीध   पप

  म॑प   गम   गरे   सासा

- नी़सा   रे,ऩी   सारे,   ऩीसा,

  ऩीऩी   ध़प़   ऩीसा   रेसा

  गम   प,ग   मप,   गम,

गम	पध	म॑प	गम
पनी	सां,प	नीसां,	पनी,
पनी	सारें	सांनी	रेंसां
गंगं	रेंसां	नीसां	रेंसां
नीनी	धप	म॑प	गम
गग	रेसा	ऩीसा	गम
पम	गम	ग-	--
--	--	ऩीसा	गम
पम	गम	ग-	--
ऩीसा	गम	पम	गम

स्वयं जांच अभ्यास 1

6.1 बिहाग राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) <u>नि</u>

ग) ग

घ) म

6.2 बिहाग राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) म

ख) रे

ग) प

घ) नी

6.3 बिहाग राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) रात्रि का दूसरा प्रहर

घ) दोपहर

6.4 बिहाग राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) गंधार

ख) षड़ज

ग) धैवत

घ) कोई भी नहीं

6.5 बिहाग राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) ग

ख) म

ग) रे

घ) कोई भी नहीं

6.6 बिहाग राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) आसावरी

ग) बिहाग

घ) बिलावल

6.7 बिहाग राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) प ग म ग, रे सा

ख) ध सां नि ध प, म ग

ग) ध नि ध प म ग प ध नी

घ) ध नि सां रें नी ध प, म ग

6.8 बिहाग राग की द्रुत ख्याल/लक्षण गीत में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

6.9 बिहाग राग की द्रुत ख्याल/लक्षण गीत को केवल तीनताल में ही गाया जाता है।

क) हां

ख) नहीं

6.10 बिहाग राग, कल्याण तथा भैरव रागों का मिश्रण है।

क) सही

ख) गलत

6.4 सारांश

बिहाग राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत की गायन विधा के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। बिहाग राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में द्रुत ख्याल/लक्षण गीत (छोटा ख्याल), मध्य तथा तेज लय में गाया जाता है। द्रुत ख्याल/लक्षण गीत में तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ गाया जाता है।

6.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।

- छोटा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा मध्य या द्रुत लय में गाई जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।
- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।
-

6.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

6.1 उत्तर: ग)

6.2 उत्तर: घ)

6.3 उत्तर: ग)

6.4 उत्तर: घ)

6.5 उत्तर: ग)

6.6 उत्तर: घ

6.7 उत्तर: क)

6.8 उत्तर: ग)

6.9 उत्तर: ख)

6.10 उत्तर: ख)

6.7 संदर्भ

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

6.8 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

6.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग बिहाग का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग बिहाग का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग बिहाग के छोटा ख्याल को लिखिए।

प्रश्न 4. राग बिहाग के छोटे ख्याल की पांच तानों को लिखिए।

इकाई-7
यमन राग की स्वरमालिका
(वादन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
7.1	भूमिका
7.2	उद्देश्य तथा परिणाम
7.3	यमन राग का परिचय तथा/स्वरमालिका
7.3.1	यमन राग का परिचय
7.3.2	यमन राग का आलाप
7.3.3	यमन राग की स्वरमालिका 1
7.3.4	यमन राग की स्वरमालिका 2
	स्वयं जांच अभ्यास 1
7.4	सारांश
7.5	शब्दावली
7.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
7.7	संदर्भ
7.8	अनुशंसित पठन
7.9	पाठगत प्रश्न

7.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA104PR की यह सातवीं इकाई है। इस इकाई में वादन के संदर्भ में यमन राग की स्वरमालिका को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, तथा आनंददायक होता है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा रागों के चलन को जानने के लिए स्वरमालिकों का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। किसी राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की तालबद्ध रचना को स्वरमालिका कहते हैं। इससे स्वर-ज्ञान के साथ-साथ लय तथा राग के स्वरुप को जानने में वृद्धि होती है। इससे विद्यार्थियों में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास संभव होता है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी यमन राग में स्वरमालिका को बजाने से, राग के स्वरुप की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे, उन्हें भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे तथा क्रियात्मक रूप से यमन राग की स्वरमालिका को बजा सकेंगे।

7.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- यमन राग के क्रियात्मक स्वरूप की जानकारी प्रदान करना।
- यमन राग की स्वरमालिका को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- यमन राग की स्वरमालिका को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी, वादन के अंतर्गत, यमन राग के क्रियात्मक स्वरूप के विषय में जान पाएगा।

- विद्यार्थी, वादन के अंतर्गत, यमन राग की स्वरमालिका को लिखने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी, वादन के अंतर्गत, यमन राग की स्वरमालिका को बजाने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी, वादन के अंतर्गत, कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास होगा।
- विद्यार्थी में, वादन के अंतर्गत, यमन राग की स्वरमालिका से, संगीत के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

7.3 यमन राग का परिचय तथा स्वरमालिका (वादन के संदर्भ में)

7.3.1 यमन राग का परिचय

प्रथम पहर निशि गाइये ग नि को कर संवाद।

जाति संपूर्ण तीवर मध्यम यमन आश्रय राग ॥

राग - यमन

थाट - कल्याण

जाति - सम्पूर्ण-सम्पूर्ण।

स्वर – मध्यम तीव्र (मॆ)

वादी - ग

सम्वादी - नि

गायन वादन समय - रात्रि का प्रथम पहर

न्यास के स्वर - ग, प, नि।

समप्रकृतिक राग - यमन कल्याण।

आरोह - ऩि रे ग, मं प, मं ध नि रें सां।

अवरोह - सां नि ध प मं ध प मं ग रे ऩि रे सा।

पकड़ - ऩि ध़ ऩि रे ग, रे सा, ऩि रे ग मं प, प रे ग, रे ऩि रे सा।

इस राग के दो नाम हैं यमन अथवा कल्याण। कुछ लोग इसे ईमन भी कहते हैं, किन्तु कल्याण इसका प्राचीन नाम है। यह कल्याण राग का आश्रय राग भी हैं, अर्थात इसके नाम पर ही इसके थाट का नाम भी है। इस राग की चलन अधिकतर मंद्र ऩि से प्रारंभ होती है, तथा तीनो सप्तकों में होती है। इसमें ऩि रे ग और प रे स्वर-समूह बार-बार प्रयोग किये जाते हैं। इस राग की प्रकृति गंभीर है, इसमें बड़ा और छोटा ख्याल, तराना, ध्रुपद तथा मसीतखानी और रजाखानी गतें सभी सामान्य रूप से गाई बजाई जाती है। इस राग में सा, रे, ग, प, और नि स्वरों पर न्यास करते हैं।

7.3.2 यमन राग के अलंकार

- **आरोह-** सा रे ग मं प ध नि सां

  अवरोह- सां नि ध प मं ग रे सा

- **आरोह-** सा सा, रे रे, ग ग,मं मं, प प, ध ध, नि नि, सां सां

  अवरोह- सां सां, नि नि, ध ध, प प,मं मं, ग ग, रे रे, सा सा

- **आरोह-** सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, मं मं मं, प प प, ध ध ध, नि नि नि, सां सां सां

  अवरोह- सां सां सां, नि नि नि, ध ध ध, प प प, मं मं मं, ग ग ग, रे रे रे, सा सा सा

- **आरोह-** सा रे सा, रे ग रे, ग मं ग, मं प मं, प ध प, ध नि ध, नि सां नि, सां रें सां

  अवरोह- सां रें सां, नि सां नि, ध नि ध, प ध प, मं प मं, ग मं ग, रे ग रे, सा रे सा

- **आरोह-** सा रे ग, रे ग मं, ग मं प, मं प ध, प ध नि, ध नि सां

  अवरोह- सां नि ध, नि ध प, ध प मं, प मं ग, मं ग रे, ग रे सा

- **आरोह-** सा रे ग मं, रे ग मं प, ग मं प ध, मं प ध नि, प ध नि सां

  अवरोह- सां नि ध प, नि ध प मं, ध प मं ग, प मं ग रे, मं ग रे सा

- **आरोह-** सा रे ग मं प, रे ग मं प ध, ग मं प ध नि, मं प ध नि सां

  अवरोह- सां नि ध प मं, नि ध प मं ग, ध प मं ग रे, प मं ग रे सा

- **आरोह-** सा ग रे, रे मं ग, ग प मं, मं ध प, प नि ध, ध सां नि, नि रें सां

  अवरोह- नि रे सां, ध सां नि, प नि ध, मं ध प, ग प मं, रे मं ग, सा ग रे

- **आरोह-** सा रे ग सा, रे ग मं रे, ग मं प ग, मं प ध मं, प ध नि प, ध नि सां ध, नि सां रें नि, सां रें गं सां

  अवरोह- सां रें गं सां, नि सां रें नि, ध नि सां ध, प ध नि प, मं प ध मं, ग मं प ग, रे ग मं रे, सा रे ग सा

- **आरोह-** सा ग रे सा, रे मं ग रे, ग प मं ग, मं ध प मं, प नि ध प, ध सां नि ध, नि रें सां नि, सां गं रें सां

  अवरोह- सां गं रें सां, नि रें सां नि, ध सां नि ध, प नि ध प, मं ध प मं, ग प मं ग, रे मं ग रे, सा ग रे सा

- **आरोह-** सा ग मं रे सा, रे मं प ग रे, ग प ध मं ग, मं ध नि प मं, प नि सां ध प, ध सां रें नि ध, नि रें गं सां नि, सां गं मं रें सां

  अवरोह- सां गं मं रें सां, नि रें गं सां नि, ध सां रें नि ध, प नि सां ध प, मं ध नि प मं, ग प ध मं ग, रे मं प ग रे, सा ग मं रे सा

- **आरोह-** सा ग, रे मं, ग प, मं ध, प नि, ध सां

  अवरोह- सां ध, नि प, ध मं, प ग, मं रे, ग सा

- **आरोह-** सा म॑, रे प, ग ध, म॑ नि, प सां

  अवरोह- सां प, नि म॑, ध ग, प रे, म॑ सा

- **आरोह-** सा प, रे ध, ग नि, प सां

  अवरोह- सां प, नि ग, ध रे, प सा

- **आरोह-** सा रे सा रे ग, रे ग रे ग म॑, ग म॑ ग म॑ प, म॑ प म॑ प ध, प ध प ध नि, ध नि ध नि सां

  अवरोह- सां नि सां नि ध, नि ध नि ध प, ध प ध प म॑, प म॑ प म॑ ग, म॑ ग म॑ ग रे, ग रे ग रे सा

- **आरोह-** सा रे ग सा रे ग म॑, रे ग म॑ रे ग म॑ प, ग म॑ प ग म॑ प ध, म॑ प ध म॑ प ध नि, प ध नि प ध नि सां

  अवरोह- सां नि ध सां नि ध प, नि ध प नि ध प म॑, ध प म॑ ध प म॑ ग, प म॑ ग प म॑ ग रे, म॑ ग रे म॑ ग रे सा

- **आरोह-** सा रे, रे ग, ग म॑, म॑ प, प ध, ध नि, नि सां

  अवरोह- सां नि, नि ध, ध प, प म॑, म॑ ग, ग रे, रे सा

- **आरोह-** सा रे सा सा रे ग रे सा, रे ग रे रे ग म॑ ग रे, ग म॑ ग ग म॑ प म॑ ग, म॑ प म॑ म॑ प ध प म॑, प ध प प ध नि ध प, ध नि ध ध नि सां नि ध, नि सां नि नि सां रें सां नि, सां रें सां सां रें गं रें सां

  अवरोह- सां रें सां सां रें गं रें सां, नि सां नि नि सां रें सां नि, ध नि ध ध नि सां नि ध, प ध प प ध नि ध प, म॑ प म॑ म॑ प ध प म॑, ग म॑ ग ग म॑ प म॑ ग, रे ग रे रे ग म॑ ग रे, सा रे सा सा रे ग रे सा

- **आरोह-** सा रे सा रे सा ग, रे ग रे ग रे म॑, ग म॑ ग म॑ ग प, म॑ प म॑ प म॑ ध, प ध प ध प नि, ध नि ध नि ध सां

  अवरोह- सां नि सां नि सां ध, नि ध नि ध नि प, ध प ध प ध म॑, प म॑ प म॑ प ग, म॑ ग म॑ ग म॑ रे, ग रे ग रे ग सा

- **आरोह-** सा रे रे ग, रे ग ग म॑, ग म॑ म॑ प, म॑ प प ध, प ध ध नि, ध नि नि सां

अवरोह- सां नि नि ध, नि ध ध प, ध प प मं, प मं मं ग, मं ग ग रे, ग रे रे सा

7.3.2 यमन राग का आलाप

1 सा, ऩी सा, ऩी रे सा, ऩी सा ऩी ऩी रे सा, ऩी ध़ ऩी ऩी सा।

2 सा़ ऩी ध़ प़, ऩी ध़ ऩी ऩी सा, ऩी रे सा, रे ऩी ध़ प़,

म़ं ध़ प़, म़ं ध़ ऩी रे सा सा।

3 ऩी रे ग, रे ग, रे सा ऩी रे सा, म़ं ध़ ऩी रे ग, रे ग, रे सा

4 ऩी रे, ग मं मं प, प, मं ग, रे ग मं, मं ग रे सा

5 ग मं प, प, मं ध प, प, मं ध नी नी ध प, प,

मं ध नी नी रें सां, सां

6 नी रें गं, रें गं, रें सां नी रें सां, नी रें, गं मं गं,

रें गं, गं रें सां

7 रें नी ध प, प, मं ध प मं ग, रे मं ग रे ऩी रे सा

7.3.3 राग यमन की स्वरमालिका 1

राग: यमन **ताल: तीनताल** **लय: मध्य**

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थायी															
								म॑	ध	नी	सा	नी	ध	प	म॑
प	-	-	रे	ग	रे	सा	सा								
								नी	ध	नी	रे	ग	रे	म	ग
म	ध	नि	ध	प	म॑	ध	प								
								म॑	ध	नी	सा	नी	ध	प	म॑
प	-	-	रे	ग	रे	सा	सा								
								नी	ध	नी	रे	ग	रे	म	ग
म	ध	नि	ध	प	म॑	ध	प								
अन्तरा															
								ग	ग	म॑	ध	सा	नी	रे	सा
नी	रे	ग	रे	नी	रे	सा	सा								
								नी	रे	नी	ध	नी	ध	प	प
रे	–	ग	म॑	रे	ग	रे	सा								
								ग	ग	म॑	ध	सा	नी	रे	सा
नी	रे	ग	रे	नी	रे	सा	सा								
								नी	रे	नी	ध	नी	ध	प	प
रे	–	ग	म॑	रे	ग	रे	सा								

7.3.4 राग यमन की स्वरमालिका 2

राग: यमन **ताल: तीनताल** **लय: मध्य**

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थायी															
								नी	ध	प	म॑	प	म॑	ग	म
प	-	रे	ग	रे	सा	ऩी	सा								
								ऩी	रे	ऩी	-	ध़	प़	म़॑	प़
म़॑	ध़	ऩी	रे	ग	रे	सा	-								
								ऩी	रे	ग	म॑	प	म॑	ध	नी
सां	रें	सां	नी	ध	प	म॑	ग								
अन्तरा															
								ग	म	ध	नी	रें	सां	नी	रें
सां	नी	रें	गं	रें	नी	रें	सा								
								नी	रें	नी	ध	नी	ध	प	प
रे	–	ग	म॑	ग	रे	सा	-								
								ऩी	रे	ग	म॑	ध	नी	रें	सां
रें	नी	ध	प	म॑	ग	रे	सा								

स्वयं जांच अभ्यास 1

7.1 किसी राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की तालबद्ध रचना को स्वरमालिका कहा जाता है।

क) सही

ख) गलत

7.2 स्वरमालिका किसे कहते हैं?

क) राग में प्रयुक्त होने वाली ताल रचना

ख) राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की ताल रहित रचना

ग) राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की तालबद्ध रचना

घ) राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की काव्य रचना

7.3 यमन राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) सा

ख) ग

ग) मं

घ) प

7.4 यमन राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) नि

ख) ग

ग) म

घ) प

7.5 यमन राग में गांधार स्वर कोमल होता है।

क) हां

ख) नहीं

7.6 यमन राग की स्वरमालिका में ऋषभ का प्रयोग नहीं होता है।

क) सही

ख) गलत

7.7 यमन राग में मध्यम स्वर विकृत होता है।

क) सही

ख) गलत

7.8 यमन राग का वादन समय क्या है?

क) रात्रि का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) रात्रि का चौथा प्रहर

घ) दोपहर

7.9 यमन राग में ऩी रे ग स्वर संगति लगती है।

क) गलत

ख) सही

7.10 यमन राग की जाति क्या है?

क) औढव-औढव।

ख) सम्पूर्ण-षाड़व।

ग) षाड़व-षाड़व।

घ) सम्पूर्ण-सम्पूर्ण।

7.4 सारांश

किसी राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की तालबद्ध रचना को स्वरमालिका कहा जाता है। इसे सरगम गीत भी कहते हैं। इससे स्वर-ज्ञान के साथ-साथ लय तथा राग के स्वरुप को जानने में वृद्धि होती है। इससे विद्यार्थियों में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास संभव होता है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा रागों के चलन को जानने के लिए स्वरमालिका का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है।

7.5 शब्दावली

- सरगम गीत: किसी राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की तालबद्ध रचना को सरगम गीत कहा जाता है।
- स्वरमालिका: किसी राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की (स्वरों की माला) तालबद्ध रचना को स्वरमालिका कहा जाता है।
- शास्त्रीय संगीत: शास्त्रीय संगीत वह संगीत है जो नियमों से बंधा होता है।

7.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

7.1 उत्तर: क)

7.2 उत्तर: ग)

7.3 उत्तर: ख)

7.4 उत्तर: क)

7.5 उत्तर: ख)

7.6 उत्तर: क)

7.7 उत्तर: क)

7.8 उत्तर: क)

7.9 उत्तर: ख)

7.10 उत्तर: घ)

7.7 संदर्भ

डॉ. केशव शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, मार्च 2024।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, मार्च 2024।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

7.8 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

7.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग यमन की स्वरमालिका लिखिए।

प्रश्न 2. राग यमन का परिचय लिखिए।

प्रश्न 3. राग यमन की स्वरमालिका को सितार पर बजाकर सुनाइए।

इकाई-8
भूपाली राग की स्वरमालिका
(वादन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
8.1	भूमिका
8.2	उद्देश्य तथा परिणाम
8.3	भूपाली राग का परिचय तथा स्वरमालिका
8.3.1	भूपाली राग का परिचय
8.3.2	भूपाली राग का आलाप
8.3.3	भूपाली राग की स्वरमालिका 1
8.3.4	भूपाली राग की स्वरमालिका 2
	स्वयं जांच अभ्यास 1
8.4	सारांश
8.5	शब्दावली
8.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
8.7	संदर्भ
8.8	अनुशंसित पठन
8.9	पाठगत प्रश्न

8.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA104PR की यह आठवीं इकाई है। इस इकाई में वादन के संदर्भ में भूपाली राग की स्वरमालिका को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, तथा आनंददायक होता है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा रागों के चलन को जानने के लिए स्वरमालिकों का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। किसी राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की तालबद्ध रचना को स्वरमालिका कहते हैं। इससे स्वर-ज्ञान के साथ-साथ लय तथा राग के स्वरुप को जानने में वृद्धि होती है। इससे विद्यार्थियों में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास संभव होता है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी भूपाली राग में स्वरमालिका को बजाने से, राग के स्वरुप की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे, उन्हें भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे तथा क्रियात्मक रूप से भूपाली राग की स्वरमालिका को बजा सकेंगे।

8.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- भूपाली राग के क्रियात्मक स्वरूप की जानकारी प्रदान करना।
- भूपाली राग की स्वरमालिका को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- भूपाली राग की स्वरमालिका को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी, वादन के अंतर्गत, भूपाली राग के क्रियात्मक स्वरूप के विषय में जान पाएगा।

- विद्यार्थी, वादन के अंतर्गत, भूपाली राग की स्वरमालिका को लिखने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी, वादन के अंतर्गत, भूपाली राग की स्वरमालिका को बजाने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी, वादन के अंतर्गत, कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास होगा।
- विद्यार्थी में, वादन के अंतर्गत, भूपाली राग की स्वरमालिका से, संगीत के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

8.3 भूपाली राग का परिचय तथा स्वरमालिका (वादन के संदर्भ में)

8.3.1 भूपाली राग का परिचय

राग- भूपाली

थाट- कल्याण

जाति- औडव-औडव

वादी- गंधार

संवादी- धैवत

स्वर - सभी शुद्ध

वर्जित- मध्यम तथा निषाद

समय - रात्रि का प्रथम प्रहर

समप्रकृतिक राग - देशकार, शुद्ध कल्याण

आरोह- सा रे ग, प ध सां

अवरोह- सां ध प ग रे सा

पकड़ - ग, रे सा ध़, सा रे ग, प ग, ध प ग, रे सा।

भूपाली कल्याण थाट का राग माना जाता है। इसकी जाति औडव-औडव है, इस राग में मध्यम तथा निषाद का प्रयोग नहीं किया जाता है। भूपाली का वादी स्वर गंधार तथा संवादी स्वर धैवत माना गया है। इस राग को गाने-बजाने का समय रात्रि का प्रथम प्रहर माना गया है। इसके समप्रकृतिक रागों का नाम देशकार तथा शुद्ध कल्याण है। भूपाली एक अत्यन्त लोकप्रिय राग है। इस राग में ध्रुपद, धमार, ख्याल आदि की अनेक मधुर रचनाएं उपलब्ध है। इसके साथ-साथ गीत, गज़ल, भजन, फिल्मी गीत आदि में इस राग पर आधारित रचनाएं सुनने को मिलती हैं।

भूपाली राग की अधिकतर रचनाओं में गंधार स्वर पर सम का स्थान रहता है। कुछ रचनाओं में षड्ज पर भी सम देखा गया है। गंधार के साथ-साथ रिषभ तथा पंचम स्वर प्रमुख है। आलाप आदि करते समय ध़ रे, सा इस स्वर संगति का प्रयोग करते हुए आलाप के टुकड़ों का अंत किया जाता है, जैसे सा, ध़ सा रे ग, रे सा, ध़ रे सा आदि। भूपाली राग में स्वरों का विस्तार करते समय सा ध़ सा। ध़ रे सा, प ग, रे स्वर संगतियों का बार-बार प्रयोग किया जाता है।

भूपाली राग में मध्यम तथा निषाद के वर्जित रहने से इसकी जाति औडव-औडव है। गंधार स्वर के वादी होने के कारण इस पर पूर्ण न्यास किया जाता है, जैसे ध़ सा रे ग, ग प ग रे ग, सा ध़ सा रे ग, रे ग प ग, रे, ग रे सा।

भूपाली राग का समप्रकृतिक राग देशकार है। भूपाली तथा देशकार दोनों रागों में एक जैसे स्वर लगते हैं- सा रे ग प ध सां, सा ध प ग रे सा। परन्तु स्वरों के एक जैसा होने के साथ-साथ दोनों रागों का चलन अलग अलग है। जिससे इन दोनों में अंतर स्पष्ट रूप से पहचाना जा सकता है। भूपाली राग में हम गंधार तथा पंचम पर न्यास करते हैं। जबकि देशकार राग में हम पंचम तथा धैवत पर न्यास किया जाता है देशकार में गंधार पर कभी नहीं रूकते हैं।

शुद्ध कल्याण राग भी भूपाली का समप्रकृतिक राग माना जाता है। दोनों रागों में ग प ध प, प ग की संगति की जाती है तथा गंधार तथा धैवत क्रमशः वादी संवादी हैं। इसके अतिरिक्त दोनों का आरोह भी एक जैसा है। अंतर की दृष्टि से शुद्ध कल्याण में प रे की संगति बार-बार प्रयुक्त होती है पर भूपाली में यह संगति नहीं ली जाती। इसके अतिरिक्त अवरोह करते समय शुद्ध कल्याण में निषाद का प्रयोग किया जाता है। भूपाली में निषाद वर्जित रहने से, अवरोह करते समय दोनों रागों का अंतर स्पष्ट हो जाता है।

8.3.2 भूपाली राग के अलंकार

- सा रे ग प ध सां

  सां ध प ग रे सा

- सारे रेग गप पध धसां

  सांध धप पग गरे रेसा

- साग रेप गध पसां

  सांप धग परे ग सा

- सारे साग साप साध सासां

  सांध सांप साग सारें सांसा

- सासा रेरे गग पप धध सांसां

  सांसां धध पप गग रेरे सासा

- साप रेध गसां पें धगं

  गंध रेंप सांग धरे पसा

- रेंसा पग धप साध रेंसा गरें

  रेंगं सारें धसां पध गप सारे

- सासा गग रेरे पप गग धध पप सांसां

  सांसां पप धध गग पप रेरे गग सासा

- सासासा रेरेरे गगग पपप धधध सांसांसां

  सांसांसां धधध पपप गगग रेरेरे सासासा

- सागप रेपध गधसां पसारें धरेंगं

गरेंध   रेंसांप   सांधग   धगरे   पगसा

- सागरे   रेपग   गधप   पसांध   धरेंसां

  सारेंध   धसांप   पधग   गपरे   रेगसा

- रेसाग   गरेप   पगध   धपसां   सांगरें

  रेंगसां   सांपध   धगप   परेग   गसारे

- रेगसा   गपरे   पधग   धसांप   सांगरें

  सांगरें   धपसां   गपध   रेगप   सारेग

- गरेसा   पगरे   धपग   सांधप   रेंसांध

  धसारे   पधसां   गपध   रेगप   सारेग

- सागप   रेपध   गधसां   पसारें   धरेंगं

  गरेंध   रेंसांप   सांधग   धगरे   पगसा

- सारेसा   रगरे   गपग   पधप   धसांध

  धसांध   पधप   गपग   रेगरे   सारेसा

- सारेरे   रेगग   गपप   पधध   धसांसां

  सांधध   धपप   पगग   गरेरे   रेसासा

- सारेरे   गगग   गपप   पधध   धसांसां

  सांधध   धपप   पगग   गरेरे   रेसासा

- रेरेरे   गगग   पपप   धधध   सांसांसां

  सांसांसां   धधध   पपप   गगग   रेरेरे

- सासाध़   रेरेसा   गगरे   पपग   धधप   सांसांध

  धधसां   पपध   गगप   रेरेग   सासारे   ध़ध़सा

- सारेगप रेगपध गपधसां
  सांधपग धपगरे पगरेसा
- सारेगग रेगपप गपधध पधसांसां धसांरेंरें
  रेंसांधध सांधपप धपगग पगरेरे गरेसासा
- सारेगप रेगपध गपधसां पधसांरें धसांरेंगं
  गंरेंसांध रेंसांधप सांधपग धपगरे पगरेसा
- सारेपग रेगधप गपसांध पधरेंसा धसांगंरें
  रेंगंसांध सांरेंधप धसांपग पधगरे गपरेसा
- सागरेप रेपगध गधपसां पसांधरें धरेंसांगं
  गंसांरेंध रेंधसांप सांपधग धगपरे परेगसा
- सागपरे रेपधग गधसांप पसांरेंध धरेंगंसां
  सांगंरेंध धरेंसांप पसांधग गधगरे रेपगसा
- सारेगसा रेगपरे गपधग पधसांप धसांरेंध
  धरेंसांध पसांधप गधपग रेपगरे सागरेसा
- सारेगपध रेगपधसां गपधसांरें पधसांरेंगं धसांरेंगंपं
  पंगंरेंसांध गंरेंसांधप रेंसांधपग सांधपगरे धपगरेसा
- सारेसारेरे सागसागग सापसापप साधसाधध सासांसासांसां
  सांधसांधध सांपसांपप सांगसागग सांरेसांरेरे सांसासांसासा
- सारेसारेरे रेगरेगग गपगपप पधपधध धसांधसांसां
  सांधसांधध धपधपप पगपगग गरेगरेरे रसारेसासा

- गपगपध   पधपधसां   धसांधसारें   सारेंसारेंगं

  गंरेंगंरेंसां   रेंसारेंसांध   सांधसांधप   धपधपग

- गरेसाध़प़   पगरेसाध़   धपगरेसा   सांधपगरे   रेंसांधपग

  गपधसारे   रेंगपधसां   सारेंगपध   धसारेगप   प़ध़सारेग

- गरेगरेसा   पगपगरे   धपधपग   सांधसांधप

  पधसांधसां   गपधपध   रेगपगप   सारेगरेसा

- सारेसारेगग   रेगरेगपप   गपगपधध   पधपधसांसां

  सांधसांधपप   धपधपगग   पगपगरेरे   गरेगरेसासा

- सासारेरेगग   रेरेगगपप   गगपपधध   पपधधसांसां

  सांसांधधपप   धधपपगग   पपगगरेरे   गगरेरेसासा

- सारेगपधसां   रेगपधसारें   गपधसारेंगं

  गंरेंसांधपग   रेंसांधपगरे   सांधपगरेसा

- रेगरेगपप   गपगपधध   पधपधसांसां   धसांधसारेंरें

  रेंसारेंसांधध   सांधसांधपप   धपधपगग   पगपगरेसा

- ध़सारेगपध   सारेगपधसां   रेगपधसारें   गपधसारेंगं   पधसेंरेंगंपं

  पंगंरेंसांधप   गंरेंसांधपग   रेंसांधपगरे   सांधपगरेसा   सांधपगरेसा   ध़पगरेसाध़

- पगपगरेसा   धपधपगरे   सांधसांधपग   रेंसारेंसाधप

  पधपधसारें   गपगपधसां   गंरेंगंरेंधप   सारेसारेपग

- ध़ध़ध़ध़सारे   सासासासारेग   रेरेरेरेगप   गगगगपध   पपपपधसां

  सांसांसांसांधप   धधधधपग   पपपपगरे   गगगगरेसा   रेरेरेरेसाध़

- सारेगपसारे रेगपधरेग गपधसांगप पधसारेंपध धसारेंगंधसां
  सांधगरेंसांध धपरेंसांधप पखसांधपग गरेधपगरे रेसापगरेसा
- सागरेसा रेपगरे गधपग पसांधप धरेंसांध सांगरेंसा
  गंसारेंगं गंसारेगं रेंधसारें सांपधसां धगपध परेगप गसारेग
- सापरेंग रेधगप गसांपध परेंधसां धगंसारें
  गंधरेंसा रेंपसांध सांगधप धरेपग पसागरे
- सापगरे रेधपग गसांधप परेसांध धगरेंसां
  गंधसारें रेंपधसां सांगपध धरेगप पसारेग
- सारेगपधसारें रेगपधसारेंगं गपधसारेंगंपं
  पंगरेंसांधपग गरेंसांधपगरे रेंसांधपगरेसा
- सारे साग सारे गरे रेग रेप रेग पग गप गध
  गप धप पध पसां पध सांध सांध सांप सांध
  पध धप धग धप गप पग परे पग रेग गरे गसा गरे सारे
- सारे गप धसां धप गरे सारे गप धप गरे
  सारे गप गरे सारे गरे सारे सा-
- सा
  सा रे सा
  सा रे ग रे सा
  सा रे ग प ग रे सा
  सा रे ग प ध प ग रे सा
  सा रे ग प ध सां ध प ग रे सा
- सा रे ग रे
  सा रे ग प ग रे
  सा रे ग प ध प ग रे

सा रे ग प ध सां ध प ग रे
सा रे ग प ध सां रें सां ध प ग रे
सा रे ग प ध सां रें गं रें सां ध प ग रे
सा रे ग प ध प ग रे सा

- सा – सां – सां ध प ग रे सा
  ध़ – ध – ध प ग रे सा
  प – प – प ग रे सा
  रे – रे – रे सा
  सा – सा – सा

8.3.3 भूपाली राग का आलाप

- सा ध़, सा ध़ सा, सा रे ग, रे सा, ग रे सा, ध़, सा, सा रे ग, रे सा।
- सा रे ग, सा रे सा, ग, रे सा, सा ग, प ग, रे ग, ध़, सा रे सा ग प ग, ध प ग प ध प, रे ग, रे सा।
- सा ध़ प़ सा, रे सा, सा रे ग, ध सा, रे ग, सा, प़ ध़ सा रे ग, प ग, ध प ग,रे ग प ग, रे ग रे सा।
- सा रे ग प, ग रे, ध प, ग प ग रे, सा रे ग रे, सा रे ध़ सा, सा ध़ सा प़ ध़ सा, प़ ध़ प़ सा ग रे सा।
- सा रे ग रे ग प, ध प, ग प, ग रे, सा रे ग रे, ग प ध प, ग रे सा रे ध सां।
- सा रे ग प ध ग, रे ग, रे ग, प ग, ग प ध सां, सां ध प, ग रे ग प ध प ग, रे ग रे सा रे सा ध़ सा रे ग रे ग, प ग, ध सां गं रें सां ध, प ग, रे सा।

8.3.4 राग भूपाली की स्वरमालिका 1

राग: भूपाली **ताल: तीनताल** **लय: मध्य**

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थायी															
								सा	ध	सा	रे	ग	रे	सा	रे
प	-	ग	रे	ग	रे	सा	सा								
								ग	ग	प	प	ध	ध	प	प
ग	रे	ग	प	ग	रे	सा	सा								
								सा	ध	सा	रे	ग	रे	सा	रे
प	-	ग	रे	ग	रे	सा	सा								
								ग	ग	प	प	ध	ध	प	प
ग	रे	ग	प	ग	रे	सा	सा								
x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
अंतरा															
								ग	ग	ग	ग	प	प	ध	प
सा	–	सा	सा	सा	रे	सा	सा								
								सा	रे	ग	रे	सा	रे	सा	ध
प	सा	ध	ध	ग	रे	सा	सा								
								ग	ग	ग	ग	प	प	ध	प
सा	–	सा	सा	सा	रे	सा	सा								
								सा	रे	ग	रे	सा	रे	सा	ध
प	सा	ध	ध	ग	रे	सा	सा								

8.3.4 राग भूपाली की स्वरमालिका 2

राग: भूपाली **ताल: तीनताल** **लय: मध्य**

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थायी															
								सां	सां	ध	प	ग	रे	सा	रे
ग	-	प	ग	रे	ग	प	ध								
								प	ग	रे	सा	ध़	ध़	प़	मं
प़	ध़	ध़	सा	ग	रे	-	सा								
								सां	सां	ध	प	ग	रे	सा	रे
ग	-	प	ग	रे	ग	प	ध								
								प	ग	रे	सा	ध़	ध़	प़	मं
प़	ध़	ध़	सा	ग	रे	-	सा								
अंतरा															
								ग	-	ग	प	-	प	ध	प
सां	–	सां	सां	सां	रें	ध	सां								
								गं	गं	रें	सां	रें	गं	रें	सां
सां	ध	प	ग	ध़	रे	सा	-								
								ग	-	ग	प	-	प	ध	प
सां	–	सां	सां	सां	रें	ध	सां								
								गं	गं	रें	सां	रें	गं	रें	सां
सां	ध	प	ग	ध़	रे	सा	-								

स्वयं जांच अभ्यास 1

8.1 किसी राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की तालबद्ध रचना को स्वरमालिका कहा जाता है।

क) सही

ख) गलत

8.2 स्वरमालिका किसे कहते हैं?

क) राग में प्रयुक्त होने वाली ताल रचना

ख) राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की ताल रहित रचना

ग) राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की तालबद्ध रचना

घ) राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की काव्य रचना

8.3 भूपाली राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) सा

ख) ग

ग) म

घ) प

8.4 भूपाली राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) ध

ख) ग

ग) म

घ) प

8.5 भूपाली राग में गांधार स्वर कोमल होता है।

क) हां

ख) नहीं

8.6 भूपाली राग की स्वरमालिका में ऋषभ का प्रयोग नहीं होता है।

क) सही

ख) गलत

8.7 भूपाली राग में मध्यम स्वर विकृत नहीं होता है।

क) सही

ख) गलत

8.8 भूपाली राग का वादन/गायन समय क्या है?

क) रात्रि का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) रात्रि का चौथा प्रहर

घ) दोपहर

8.9 भूपाली राग में ऩी रे सा ग स्वर संगति लगती है।

क) सही

ख) गलत

8.10 भूपाली राग की जाति क्या है?

क) औढव-औढव।

ख) सम्पूर्ण-षाड़व।

ग) षाड़व-षाड़व।

घ) सम्पूर्ण-सम्पूर्ण।

8.4 सारांश

किसी राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की तालबद्ध रचना को स्वरमालिका कहा जाता है। इसे सरगम गीत भी कहते हैं। इससे स्वर-ज्ञान के साथ-साथ लय तथा राग के स्वरुप को जानने में वृद्धि होती है। इससे विद्यार्थियों में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास संभव होता है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा रागों के चलन को जानने के लिए स्वरमालिका का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है।

8.5 शब्दावली

- सरगम गीत: किसी राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की तालबद्ध रचना को सरगम गीत कहा जाता है।
- स्वरमालिका: किसी राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की (स्वरों की माला) तालबद्ध रचना को स्वरमालिका कहा जाता है।
- शास्त्रीय संगीत: शास्त्रीय संगीत वह संगीत है जो नियमों से बंधा होता है।

8.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

8.1 उत्तर: क)

8.2 उत्तर: ग)

8.3 उत्तर: ख)

8.4 उत्तर: क)

8.5 उत्तर: ख)

8.6 उत्तर: क)

8.7 उत्तर: क)

8.8 उत्तर: क)

8.9 उत्तर: ख)

8.10 उत्तर: क)

8.7 संदर्भ

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

8.8 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

8.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग भूपाली का सरगम गीत/स्वरमालिका लिखिए।

प्रश्न 2. राग भूपाली का परिचय लिखिए।

प्रश्न 3. राग भूपाली के सरगम गीत को गाकर सुनाइए।

इकाई-9
बिहाग राग की स्वरमालिका (वादन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
9.1	भूमिका
9.2	उद्देश्य तथा परिणाम
9.3	बिहाग राग का परिचय तथा स्वरमालिका
9.3.1	बिहाग राग का परिचय
9.3.2	बिहाग राग का आलाप
9.3.3	बिहाग राग की स्वरमालिका
	स्वयं जांच अभ्यास 1
9.4	सारांश
9.5	शब्दावली
9.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
9.7	संदर्भ
9.8	अनुशंसित पठन
9.9	पाठगत प्रश्न

9.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA104PR की यह नवम इकाई है। इस इकाई में वादन के संदर्भ में बिहाग राग की स्वरमालिका को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, तथा आनंददायक होता है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा रागों के चलन को जानने के लिए स्वरमालिकों का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। किसी राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की तालबद्ध रचना को स्वरमालिका कहते हैं। इससे स्वर-ज्ञान के साथ-साथ लय तथा राग के स्वरुप को जानने में वृद्धि होती है। इससे विद्यार्थियों में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास संभव होता है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी बिहाग राग में स्वरमालिका को बजाने से, राग के स्वरुप की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे, उन्हें भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे तथा क्रियात्मक रूप से बिहाग राग की स्वरमालिका को बजा सकेंगे।

1.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- बिहाग राग के क्रियात्मक स्वरूप की जानकारी प्रदान करना।
- बिहाग राग की स्वरमालिका को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- बिहाग राग की स्वरमालिका को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी, वादन के अंतर्गत, बिहाग राग के क्रियात्मक स्वरूप के विषय में जान पाएगा।

- विद्यार्थी, वादन के अंतर्गत, बिहाग राग की स्वरमालिका को लिखने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी, वादन के अंतर्गत, बिहाग राग की स्वरमालिका को बजाने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी, वादन के अंतर्गत, कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास होगा।
- विद्यार्थी में, वादन के अंतर्गत, बिहाग राग की स्वरमालिका से, संगीत के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

9.3 बिहाग राग का परिचय तथा स्वरमालिका (वादन के संदर्भ में)

9.3.1 बिहाग राग का परिचय

राग - बिहाग

थाट – बिलावल

जाति - औडव-संपूर्ण

वादी - गंधार

संवादी - निषाद

स्वर - दोनों मध्यम, शेष स्वर शुद्ध

वर्जित - आरोह में रिषभ तथा धैवत

समय - रात्रि का दूसरा प्रहर

आरोह – ऩि सा ग, म प, नि सां

अवरोह - सां नि ध प, म॑ प ग म ग, रे सा

पकड़ - प, म॑ प ग म ग, रे सा

राग बिहाग बिलावल थाट का एक राग है। इसके आरोह में रिषभ तथा धैवत वर्जित हैं। इसकी जाति औडव-संपूर्ण है। बिहाग का वादी स्वर गंधार तथा संवादी स्वर निषाद है। इस राग में दोनों मध्यम प्रयुक्त होते हैं, इसका समय रात्रि का दूसरा प्रहर माना गया है। बिहाग का आरम्भ षड्ज की अपेक्षा मंद्र निषाद में किया जाता है तथा रिषभ आरोह में वर्जित रहता है, जैसे. ऩि सा ग म। इसके आरोह में शुद्ध मध्यम का प्रयोग किया जाता है। तीव्र मध्यम का प्रयोग अवरोह में केवल पंचम की सहायता से किया जाता है जैसे - सां नि ध प, म॑ प, ग म ग या म॑ प ग म ग। बिहाग के अवरोह में रिषभ तथा धैवत स्वर अल्प हैं इसलिए अवरोह करते समय पहले गंधार तथा निषाद पर रूका जाता है। फिर रिषभ तथा धैवत का स्पर्श करते हुए षड्ज तथा पंचम पर आते हैं, जैसे . सां नि, प, म॑ प ग म ग, सा। बिहाग में म॑ प ग म ग, रे सा अवरोह में किया जाता है। म॑ प करने के बाद ग म ग करते हुए गंधार पर रूकते हैं फिर रे सा करते हैं।

9.3.2 बिहाग राग का आलाप

- नी़ ऩी स, सा, साऩी, साग, रेऩी, साऩी, नी़ साऩी, सा, सा,
- सा ऩी ध़ प़, प़, प़ ऩी साग, ^रे^सा, नी़ ऩी सा, सा,
- ऩी सा ग म ग, सा ग म म ग, ग, ग म प, प
- सा ग म प, म॑ प म॑ प ग म ग, ^रे^सा, सा, ऩी ऩी सा
- ग म प नी ऽ ध प, ध म॑ प, म॑ प ग म ग, रे सा
- ग म प नी नी सां, सां, नी सां रें सां, नी सां गं मं मं गं, रें सां
- म म प नी नी सां रें सां, गं मं पं पं, मं॑ पं गं मं गं, ^रें^सां
- सां नी ध प, प , म॑ प ग म ग, ग ^रे^सा, ऩी ऩी सा सा

9.3.3 राग बिहाग की स्वरमालिका 1

राग: बिहाग **ताल: तीनताल** **लय: मध्य**

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थायी															
								ग	म	प	म	ग	म	ग	सा
ऩी	-	ऩी	सा	ग	म	ग	-								
								सा	सा	ऩी	-	ध़	ध़	प़	म़'
प़	ऩी	ऩी	सा	ग	रे	सा	-								
								ग	म	प	म	ग	म	ग	सा
ऩी	-	ऩी	सा	ग	म	ग	-								
								सा	सा	ऩी	-	ध़	ध़	प़	म़'
प़	ऩी	ऩी	सा	ग	रे	सा	-								
अंतरा															
								ग	ग	म	प	नि	नी	सां	-
नि	सां	गं	मं	गं	रें	सां	-								
								प	नि	सां	गं	रें	सां	नि	ध
प	म	प	ग	म	ग	रे	सा								
								ग	ग	म	प	नि	नी	सां	-
नि	सां	गं	मं	गं	रें	सां	-								
								प	नि	सां	गं	रें	सां	नि	ध
प	म	प	ग	म	ग	रे	सा								

9.3.4 राग बिहाग की स्वरमालिका 2

राग: बिहाग **ताल: तीनताल** **लय: मध्य**

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थायी															
								नि	सा	ग	म	प	नि	सा	-
नि	-	ध	प	ग	म	ग	-								
								प	नि	सा	ग	रे	सा	नि	सा
प	म	ग	म	ग	रे	सा	सा								
								नि	सा	ग	म	प	नि	सा	-
नि	-	ध	प	ग	म	ग	-								
								प	नि	सा	ग	रे	सा	नि	सा
प	म	ग	म	ग	रे	सा	सा								
अंतरा															
								ग	म	प	नि	सां	नि	सां	सां
नि	सां	गं	रे	सां	नि	ध	प								
								प	नि	सां	नि	ध	प	म	प
ग	म	प	म	ग	रे	नि	सा								
								ग	म	प	नि	सां	नि	सां	सां
नि	सां	गं	रे	सां	नि	ध	प								
								प	नि	सां	नि	ध	प	म	प
ग	म	प	म	ग	रे	नि	सा								

स्वयं जांच अभ्यास 1

9.1 किसी राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की तालबद्ध रचना को स्वरमालिका कहा जाता है।

क) सही

ख) गलत

9.2 स्वरमालिका किसे कहते हैं?

क) राग में प्रयुक्त होने वाली ताल रचना

ख) राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की ताल रहित रचना

ग) राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की तालबद्ध रचना

घ) राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की काव्य रचना

9.3 बिहाग राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) सा

ख) ग

ग) म

घ) प

9.4 बिहाग राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) नी

ख) ग

ग) म

घ) प

9.5 बिहाग राग में गांधार स्वर कोमल होता है।

क) हां

ख) नहीं

9.6 बिहाग राग की स्वरमालिका में ऋषभ का प्रयोग होता है।

क) सही

ख) गलत

9.7 बिहाग राग में मध्यम स्वर विकृत नहीं होता है।

क) सही

ख) गलत

9.8 बिहाग राग का गायन/वादन समय क्या है?

क) रात्रि का दूसरा प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) रात्रि का चौथा प्रहर

घ) दोपहर

9.9 बिहाग राग में ऩी सा ग मप प स्वर संगति लगती है।

क) सही

ख) गलत

9.10 बिहाग राग की जाति क्या है?

क) औढव-औढव।

ख) सम्पूर्ण-षाड़व।

ग) षाड़व-षाड़व।

घ) औढव -सम्पूर्ण।

9.4 सारांश

किसी राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की तालबद्ध रचना को स्वरमालिका कहा जाता है। इसे सरगम गीत भी कहते हैं। इससे स्वर-ज्ञान के साथ-साथ लय तथा राग के स्वरुप को जानने में वृद्धि होती है। इससे विद्यार्थियों में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास संभव होता है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा रागों के चलन को जानने के लिए स्वरमालिका का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है।

9.5 शब्दावली

- सरगम गीत: किसी राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की तालबद्ध रचना को सरगम गीत कहा जाता है।
- स्वरमालिका: किसी राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की (स्वरों की माला) तालबद्ध रचना को स्वरमालिका कहा जाता है।
- शास्त्रीय संगीत: शास्त्रीय संगीत वह संगीत है जो नियमों से बंधा होता है।

9.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

9.1 उत्तर: क)

9.2 उत्तर: ग)

9.3 उत्तर: ख)

9.4 उत्तर: क)

9.5 उत्तर: ख)

9.6 उत्तर: क)

9.7 उत्तर: ख)

9.8 उत्तर: क)

9.9 उत्तर: क)

9.10 उत्तर: घ)

9.7 संदर्भ

डॉ. केशव शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, मार्च 2024।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

9.8 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

9.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग बिहाग का सरगम गीत/स्वरमालिका लिखिए।

प्रश्न 2. राग बिहाग का परिचय लिखिए।

प्रश्न 3. राग बिहाग के सरगम गीत को गाकर सुनाइए।

इकाई-10
यमन राग की द्रुत गत
(वादन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
10.1	भूमिका
10.2	उद्देश्य तथा परिणाम
10.3	राग यमन
10.3.1	यमन राग का परिचय
10.3.2	यमन राग का आलाप
10.3.3	यमन राग की द्रुत गत
10.3.4	यमन राग के तोड़े
	स्वयं जांच अभ्यास 1
10.4	सारांश
10.5	शब्दावली
10.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
10.7	संदर्भ
10.8	अनुशंसित पठन
10.9	पाठगत प्रश्न

10.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA104PR की यह दसवीं इकाई है। इस इकाई में वादन संगीत के संदर्भ में, राग यमन का परिचय, आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग यमन के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग यमन का आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को बजा सकेंगे।

10.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- यमन राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- यमन राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- यमन राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- यमन राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

- यमन राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।
- राग यमन के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

10.3 राग यमन

10.3.1 यमन राग का परिचय

प्रथम पहर निशि गाइये ग नि को कर संवाद।

जाति संपूर्ण तीवर मध्यम यमन आश्रय राग ॥

राग - यमन

थाट - कल्याण

जाति - सम्पूर्ण-सम्पूर्ण।

स्वर – मध्यम तीव्र (मं॑)

वादी - ग

सम्वादी - नि

गायन वादन समय - रात्रि का प्रथम पहर

न्यास के स्वर - ग, प, नि।

समप्रकृतिक राग - यमन कल्याण।

आरोह - ऩि रे ग, म॑ प, म॑ ध नि रें सां।

अवरोह - सां नि ध प म॑ ध प म॑ ग रे ऩि रे सा।

पकड़ - ऩि ध़ ऩि रे ग, रे सा, ऩि रे ग मं प, प रे ग, रे ऩि रे सा।

इस राग के दो नाम हैं यमन अथवा कल्याण। कुछ लोग इसे ईमन भी कहते हैं, किन्तु कल्याण इसका प्राचीन नाम है। यह कल्याण राग का आश्रय राग भी हैं, अर्थात इसके नाम पर ही इसके थाट का नाम भी है। इस राग की चलन अधिकतर मंद्र ऩि से प्रारंभ होती है, तथा तीनो सप्तकों में होती है। इसमें ऩि रे ग और प रे स्वर-समूह बार-बार प्रयोग किये जाते हैं। इस राग की प्रकृति गंभीर है, इसमें बड़ा और छोटा ख्याल, तराना, ध्रुपद तथा मसीतखानी और रजाखानी गतें सभी सामान्य रूप से गाई बजाई जाती है। इस राग में सा, रे, ग, प, और नि स्वरों पर न्यास करते हैं।

10.3.2 यमन राग का आलाप

1 सा, ऩी सा, ऩी रे सा, ऩी सा ऩी ऩी रे सा, ऩी ध़ ऩी ऩी सा।

2 सा़ ऩी ध़ प़, ऩी ध़ ऩी ऩी सा, ऩी रे सा, रे ऩी ध़ प़, म़ं ध़ प़, म़ं ध़ ऩी रे सा सा।

3 ऩी रे ग, रे ग, रे सा ऩी रे सा, म़ं ध़ ऩी रे ग, रे ग, रे सा

4 ऩी रे, ग मं मं प, प, मं ग, रे ग मं, मं ग रे सा

5 ग मं प, प, मं ध प, प, मं ध नी नी ध प, प, मं ध नी नी रें सां, सां

6 नी रें गं, रें गं, रें सां नी रें सां, नी रें, गं मं गं, रें गं, गं रें सां

7 रें नी ध प, प, मं ध प मं ग, रे मं ग रे ऩी रे सा

10.3.3 यमन राग की द्रुत गत 1

राग: यमन **ताल: तीनताल** **लय: द्रुत**

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
X				2				0				3			
स्थायी															
						ऩि	ध़	ऩि	रेरे	ग	रे	ऩि	रे	सा	ऽ
						दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दा	रा	दा	ऽ
ऩि	ध़	ऽ	ऩि	सा	ऽ										
दा	रा	ऽ	दा	रा	ऽ										
						सा	ऩि	सा	ऽ	ग	रे	ग	म॑म॑	प	म॑
						दा	रा	दा	ऽ	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
रे	ऽ	ग	म॑	रे	ऽ										
दा	ऽ	दा	रा	दा	ऽ										
अंतरा															
								प	म॑	ग	म॑	प	ध	प	ऽ
								दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	ऽ
म॑	ध	नि	ध	म॑	ध	प	ऽ								
दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	ऽ								
								म॑	ध	म॑	धनि	सां	नि	ध	ऽ
								दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दा	ऽ
रे	ऽ	ग	म॑	रे	ऽ	ऩि	ध़								
दा	ऽ	दा	रा	दा	ऽ	दा	रा								
								ऩि	रेरे	ग	म॑	ध	निनि	रें	सां
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
नि	रेंरें	गं	रें	नि	रें	सां	ऽ								
दा	दिर	दा	रा	दा	रा	दा	ऽ								
								नि	रेंरें	गं	रें	सां	नि	ध	प
								दा	दिर	दा	रा	दा	रा	दा	रा
प	ऽ	ग	म॑	रे	ऽ										
दा	ऽ	दा	रा	दा	ऽ										

10.3.4 यमन राग की द्रुत गत 2

राग: यमन **ताल: तीनताल** **लय: द्रुत**

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थायी															
								ऩी	रेरे	गग	रेरे	सा-	साऩी	ऽनी	रे
								दा	दिर	दिर	दिर	दाऽ	रदा	ऽर	दा-
ग	–	म॑	प	रे	रे	सा	ऽ								
दा	ऽ	दा	रा	दा	रा	दा	ऽ								
								ऩी	ध़ध़	ऩी	रे	ग	रेरे	ग	म॑
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
प	म॑म॑	गग	म॑म॑	गऽ	गरे	ऽरे	सा-								
दा	दिर	दिर	दिर	दाऽ	रदा	ऽर	दा-								
अंतरा															
								म॑	म॑म॑	ग	ग	म॑	धध	नी	नी
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
सां	–	सां	सां	नी	रे	सा	–								
दा	ऽ	दा	रा	दा	रा	दा	ऽ								
								नी	रेंरें	गं	रें	नी	रें	सां	–
								दा	दिर	दा	रा	दा	रा	दा	ऽ
नी	धध	पप	म॑म॑	ग-	गरे	-रे	सा-								
दा	दिर	दिर	दिर	दाऽ	रदा	ऽर	दा-								

10.3.5 यमन राग के तोड़े

- सम से सम तक –

  ऩिध ऩिरे गरे ऩिरे ग- -- ऩिध ऩीरे गरे ऩिरे ग- -- ऩिध ऩिरे गरे ऩिरे

- खाली से सम तक –

  ऩिरे गरे ग- ऩिरे गरे ग- ऩिरे गरे

- सम से सम तक –

  ऩिरे गरे ग- ग- ग- -- ऩिरे गरे ग- ग- -- ऩिरे गरे ग- ग-

- गत से सम तक –

  सांनि धप मंग रेसा ऩिरे गरे ग- सांनि धप मंग रेसा

  ऩिरे गरे ग- सांनि धप मंग रेसा ऩिरे गरे

- सम से सम तक –

  ऩिसा रेऩि सारे ऩिसा मंप धमं पध मंप निसां

  रेंनि सारें ऩिसां गंगं रेंसां निसां रेंसां

- सम से सम तक –

  निनि धप मंप धप मंप गमं गरे सा- ऩिरे गरे

  ग- ऩिरे गरे ग- ऩिरे गरे

- सम से सम तक –

गग रेसा ऩिसा रेसा ऩिऩि ध़प़ म़॑प़ ध़प़

म़॑ध़ ऩिरे सासा ऩिसा ऩिरे गम॑ पम॑ गम॑

- सम से सम तक –

म॑ध निरें सांसां निसां गरें सारें धनि धप धप म॑प

म॑ग म॑ग रेग रेसा ऩिरे गम॑ पम॑ गम॑ ग- -- ऩिरे

गम॑ पम॑ गम॑ ग- -- ऩिरे गम॑ पम॑ गम॑

- सम से सम तक –

ऩिरे सासा ऩिरे गरे सासा ऩिरे गम॑ गरे सासा ऩिरे गम॑

पम॑ गम॑ गरे सासा ऩिरे गम॑ धप म॑प गम॑ गरे सासा

ऩिरे गम॑ धनि रेंसां सांनि धनि धप म॑प म॑प म॑ग रेसा

ऩिसा ऩिरे ग- -ऩिरे ग- -ऩिरे

- ऩिरे गरे ऩिरे सासा पम॑ गरे ऩिरे सासा
- ऩिरे गरे गम॑ गम॑ पम॑ गरे ऩिरे सासा
- ऩिरे गरे पध पम॑ गम॑ पम॑ गरे सा-
- ऩिरे गम॑ धनि सांनि धप म॑ग रेरे ऩिसा
- गम॑ धनि रेंगं रेंसां निध पम॑ गरे साऽ

•	सांनि	धप	म॑ग	रेसा	ऩिरे	गम॑	धनि	सांऽ
•	ऩिरे	गरे	गम॑	गम॑	धम॑	धनि	धनि	सांऽ
•	निरें	गरें	सारें	सांनि	धप	म॑ध	निरें	सांऽ
•	गग	रेसा	ऩीसा	रेसा	ऩीऩी	ध़प़	म़॑प़	ध़प़
	म़॑ध़	ऩीरे	सासा	ऩीसा	नीरे	गम॑	पम॑	गम॑
	गम॑	धनी	सांनी	धप	म॑ध	नीरें	गरें	सांसां
	नीरें	सांनी	धप	म॑प	म॑ध	पम॑	गरे	सासा
	ऩीरे	गम॑	पम॑	गरे	साऽ	पम॑	गरे	साऽ
	पम॑	गरे	साऽ	ऩीरे	गम॑	पम॑	गरे	साऽ
	पम॑	गरे	साऽ	पम॑	गरे	साऽ	ऩीरे	गम॑
	पम॑	गरे	साऽ	पम॑	गरे	साऽ	पम॑	गरे

स्वयं जांच अभ्यास 1

10.1 यमन राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) ध

घ) ग

10.2 यमन राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) प

घ) ग

10.3 यमन राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) रात्रि का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) मध्य रात्रि

घ) दोपहर

10.4 यमन राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) गंधार

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) कोई भी नहीं

10.5 यमन राग में निम्न में से किस स्वर का आरोह में लंघन होता है?

क) ग

ख) प

ग) म

घ) सा

10.6 यमन राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) आसावरी

ग) विलावल

घ) तोड़ी

10.7 यमन राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) ध़ ऩी रे प, म ग

ख) ध़ ऩी रे ग रे नि रे सा

ग) ध नि ध प म प ध नी

घ) ध नि सां रें नी ध प, म ग

10.8 यमन राग की द्रुत गत में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

10.9 यमन राग की द्रुत गत को केवल तीनताल में ही बजाया जाता है।

क) हां

ख) नहीं

10.10 यमन राग, विलावल तथा अल्हैया रागों का मिश्रण है।

क) सही

ख) गलत

10.4 सारांश

यमन राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत की वादन विधा के अंतर्गत इस राग को बजाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। यमन राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में द्रुत गत को तेज लय में बजाया जाता है। द्रुत गत में तोड़ों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तोड़ों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

10.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- द्रुत गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा मध्य या द्रुत लय में बताई जाती हो उसे द्रुत गत कहते हैं।
- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

10.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

10.1 उत्तर: घ)

10.2 उत्तर: ख)

10.3 उत्तर: क)

10.4 उत्तर: घ)

10.5 उत्तर: ख)

10.6 उत्तर: क)

10.7 उत्तर: ख)

10.8 उत्तर: ग)

10.9 उत्तर: ख)

10.10 उत्तर: ख)

10.7 संदर्भ

डॉ. मृत्युंजय शर्मा से प्राप्त जानकारी, अप्रैल 2024।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

10.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

10.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग यमन का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग यमन का आलाप लिखिए।

प्रश्न् 3. राग यमन की द्रुत गत को लिखिए।

प्रश्न 4. राग यमन की द्रुत गत के पांच तोड़ों को लिखिए।

इकाई-11
भूपाली राग की द्रुत गत
(वादन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
11.1	भूमिका
11.2	उद्देश्य तथा परिणाम
11.3	राग भूपाली
11.3.1	भूपाली राग का परिचय
11.3.2	भूपाली राग का आलाप
11.3.3	भूपाली राग की द्रुत गत
11.3.4	भूपाली राग के तोड़े
	स्वयं जांच अभ्यास 1
11.4	सारांश
11.5	शब्दावली
11.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
11.7	संदर्भ
11.8	अनुशंसित पठन
11.9	पाठगत प्रश्न

11.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA104PR की यह ग्याहरवीं इकाई है। इस इकाई में वादन संगीत के संदर्भ में, राग भूपाली का परिचय, आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग भूपाली के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग भूपाली का आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को बजा सकेंगे।

11.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- भूपाली राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- भूपाली राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- भूपाली राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- भूपाली राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

- भूपाली राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।
- राग भूपाली के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

11.3 राग भूपाली

11.3.1 भूपाली राग का परिचय

राग- भूपाली

थाट- कल्याण

जाति- औडव-औडव

वादी- गंधार

संवादी- धैवत

स्वर - सभी शुद्ध

वर्जित- मध्यम तथा निषाद

समय - रात्रि का प्रथम प्रहर

समप्रकृतिक राग - देशकार, शुद्ध कल्याण

आरोह- सा रे ग, प ध सां

अवरोह- सां ध प ग रे सा

पकड़ - ग, रे सा ध़, सा रे ग, प ग, ध प ग, रे सा।

भूपाली कल्याण थाटका राग माना जाता है। इसकी जाति औडव-औडव है, इस राग में मध्यम तथा निषाद का प्रयोग नहीं किया जाता है। भूपाली का वादी स्वर गंधार तथा संवादी स्वर धैवत माना गया है। इस राग को गाने-बजाने का समय रात्रि का प्रथम प्रहर माना गया है। इसके समप्रकृतिक रागों का नाम देशकार तथा शुद्ध कल्याण है।भूपाली एक अत्यन्त लोकप्रिय राग है। इस राग में ध्रुपद, धमार, ख्याल आदि की अनेक मधुर रचनाएं उपलब्ध है। इसके साथ-साथ गीत, ग़ज़ल, भजन, फिल्मी गीत आदि में इस राग पर आधारित रचनाएं सुनने को मिलती हैं।

भूपाली राग की अधिकतर रचनाओं में गंधार स्वर पर सम का स्थान रहता है। कुछ रचनाओं में षड्ज पर भी सम देखा गया है। गंधार के साथ-साथ रिषभ तथा पंचम स्वर प्रमुख है। आलाप आदि करते समय ध़ रे, सा इस स्वर संगति का प्रयोग करते हुए आलाप के टुकड़ों का अंत किया जाता है, जैसे सा, ध़ सा रे ग, रे सा, ध़ रे सा आदि। भूपाली राग में स्वरों का विस्तार करते समय सा ध़ सा। ध़ रे सा, प ग, रे स्वर संगतियों का बार-बार प्रयोग किया जाता है।

भूपाली राग में मध्यम तथा निषाद के वर्जित रहने से इसकी जाति औडव-औडव है। गंधार स्वर के वादी होने के कारण इस पर पूर्ण न्यास किया जाता है, जैसे ध़ सा रे ग, ग प ग रे ग, सा ध़ सा रे ग, रे ग प ग, रे, ग रे सा।

भूपाली राग का समप्रकृतिक राग देशकार है। भूपाली तथा देशकार दोनों रागों में एक जैसे स्वर लगते हैं- सा रे ग प ध सां, सा ध प ग रे सा। परन्तु स्वरों के एक जैसा होने के साथ-साथ दोनों रागों का चलन अलग अलग है। जिससे इन दोनों में अंतर स्पष्ट रूप से पहचाना जा सकता है। भूपाली राग में हम गंधार तथा पंचम पर न्यास करते हैं। जबकि देशकार राग में हम पंचम तथा धैवत पर न्यास किया जाता है देशकार में गंधार पर कभी नहीं रूकते हैं।

शुद्ध कल्याण राग भी भूपाली का समप्रकृतिक राग माना जाता है। दोनों रागों में ग प ध प, प ग की संगति की जाती है तथा गंधार तथा धैवत क्रमशः वादी संवादी हैं। इसके अतिरिक्त दोनों का आरोह भी एक जैसा है। अंतर की दृष्टि से शुद्ध कल्याण में प रे की संगति बार-बार प्रयुक्त होती है पर भूपाली में यह संगति नहीं ली जाती। इसके अतिरिक्त अवरोह करते समय शुद्ध कल्याण में निषाद का प्रयोग किया जाता है। भूपाली में निषाद वर्जित रहने से, अवरोह करते समय दोनों रागों का अंतर स्पष्ट हो जाता है।

11.3.2 भूपाली राग का आलाप

- सा ध़, सा ध़ सा, सा रे ग, रे सा, ग रे सा, ध़, सा,
  सा रे ग, रे सा।
- सा रे ग, सा रे सा, ग, रे सा, सा ग, प ग, रे ग, ध़,
  सा रे सा ग प ग, ध प ग प ध प, रे ग, रे सा।
- सा ध़ प़ सा, रे सा, सा रे ग, ध सा, रे ग, सा, प़ ध़ सा रे ग,
  प ग, ध प ग,रे ग प ग, रे ग रे सा।
- सा रे ग प, ग रे, ध प, ग प ग रे, सा रे ग रे, सा रे ध़ सा,
  सा ध़ सा प़ ध़ सा, प़ ध़ प़ सा ग रे सा।
- सा रे ग रे ग प, ध प, ग प, ग रे, सा रे ग रे, ग प ध प,
  ग रे सा रे ध सां।
- सा रे ग प ध ग, रे ग, रे ग, प ग, ग प ध सां, सां ध प,
  ग रे ग प ध प ग, रे ग रे सा रे सा ध़ सा रे ग रे ग, प ग,
  ध सां गं रें सां ध, प ग, रे सा।

11.3.3 भूपाली राग की द्रुत गत 1

राग: भूपाली **ताल: तीनताल** **लय: द्रुत**

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई:															
								ग	पप	धध	पप	ग	रेरे	सा	रे
								दा	दिर	दिर	दिर	दा	दिर	दा	रा
ग	–	ग	रे	ग	पप	ध	प								
दा	ऽ	दा	रा	दा	दिर	दा	रा								
								ग	पप	धध	पप	ग-	गरे	-रे	सा-
								दा	दिर	दिर	दिर	दाऽ	रदा	ऽर	दा-
ध	सांसां	ध	प	ग	रेरे	सा	रे								
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा								
अंतरा															
								ग	गग	गग	प	–	पप	ध	प
								दा	दिर	दिर	दा	ऽ	दिर	दा	रा
सां	–	सां	सां	सां	रेंरें	सां	सां								
दा	ऽ	दा	रा	दा	दिर	दा	रा								
								ध	गंगं	रें	सां	रें	सांसां	ध	प
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
सां	-सां	ध	प	ग-	गरे	-रे	सा-								
दा	दिर	दा	रा	दाऽ	रदा	ऽर	दा-								
स्थाई:															
								ग	पप	धध	पप	ग	रेरे	सा	रे
								दा	दिर	दिर	दिर	दा	दिर	दा	रा
ग	–	ग	रे	ग	पप	ध	प								
दा	ऽ	दा	रा	दा	दिर	दा	रा								

11.3.4 भूपाली राग की द्रुत गत 2

राग: भूपाली **ताल: तीनताल** **लय: द्रुत**

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई:															
								सां	धध	प	ग	रे	सासा	ध़	सारे
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	दिर
ग	-	ग	रे	ग	पप	ध	प								
दा	ऽ	दा	रा	दा	दिर	दा	रा								
								सा	रेरे	ग	ग	प	पप	ध	प
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
सां	धध	प	प	ग-	गरे	-रे	सा-								
दा	दिर	दा	रा	दाऽ	रदा	ऽर	दा-								
अंतरा															
								ग	गग	प	ध	सां	–	सां	सां
								दा	दिर	दा	रा	दा	ऽ	दा	रा
सां	रेंरें	गं	रें	सां	धध	प	प								
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा								
								गं	रेंरें	सां	ध	रें	सांसां	ध	प
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
सां	धध	प	ग	प	गग	रे	सा								
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा								
स्थाई:															
								सां	धध	प	ग	रे	सासा	ध़	सारे
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	दिर
ग	-	ग	रे	ग	पप	ध	प								
दा	ऽ	दा	रा	दा	दिर	दा	रा								

11.3.5 भूपाली राग के तोड़े

- सारे गरे सासा धप गप धप धध सा-

  गंगं रेंसां रेंरें साध सांसां धप धध सा-

- सांसां धप गरे सासा गप धप धध सा-

  गप धसां रेंसां धप गप धप धध सा-

- ध़सा रेग रेसा ध़सा गग रेसा पप गरे

  धध पप सांसां धध गग रेरे गग सासा

- सारे गरे गप धप धसां धप गरे सा-
- गप धप रेंसां धप सांसां धप गरे सा-
- सारे गप धसां धप गप धप गरे सा-
- सारे गप धसां धप सांसां धप गरे सा-
- सासा रेरे गग पप धध सांसां सांसां धध

  पप गग रेरे सासा

- सारे गप गप धप धप गरे सारे गरे

  गप धप गरे सा-

- सारे गग रेग पप गप धध पध सांसां सारें सां-
- सारे गप गप धप धप गरे सारे

गरे गप धप गरे सा-

- सारे गग रेग पप गप धध पध

  सांसां धध सांसां सारें सा-

7वीं मात्रा से

सारे सारे ग- रेग रेग प- गप गप ध-

सारे सारे ग- रेग रेग प- गप गप ध-

सारे सारे ग- रेग रेग प- गप गप ध-

9वीं मात्रा से

- सारे गप धसां रेंगं रेंसां धप गप धसां
- गंगं रेंसां रेंरें सांध सांसां धप धध पग
- गप धध पध सांसां सांसां धप गरे सा-
- सारे गसा रेग सारे गग रेरे सासा ध़ध़
- सारे गरे सारे गप गरे सारे गप धप
- गरे सारे गप धसां धप गरे सारे गप
- धसां रेंसां धप धसां रेंसां धप साध़ साध़
- पग रेसा ध़सा रेग ध़सा रेग ध़सा रेग

सम से सम तक

- गंगं रेंरें सांसां धप धप गप गरे सा

रे गप धप गरे सासा सारे गसा रेग सारे

7वीं मात्रा से सम तक

- ़प़ध सासा ़धसा रेरे सारे गग रेग पप

  गप धध पध सांसां धसां धप गरे सा-

  गरे सा़ध ़प़ध सारे ग- -- गरे सा़ध

  ़प़ध सारे ग- -- गरे सा़ध ़प़ध सारे

स्वयं जांच अभ्यास 1

11.1 भूपाली राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) प

घ) ग

11.2 भूपाली राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) म

ख) नि

ग) प

घ) रे

11.3 भूपाली राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) रात्रि का दूसरा प्रहर

घ) दोपहर

11.4 भूपाली राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) गंधार

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) कोई भी नहीं

11.5 भूपाली राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) ग

ख) प

ग) म

घ) कोई भी नहीं

11.6 भूपाली राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) आसावरी

ग) भूपाली

घ) तोड़ी

11.7 भूपाली राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) नि ध प, म ग

ख) ध सां नि ध प, म ग

ग) ध नि ध प म ग प ध नी

घ) ध नि सां रें नी ध प, म ग

11.8 भूपाली राग की द्रुत ख्याल/लक्षण गीत में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

11.9 भूपाली राग की द्रुत ख्याल/लक्षण गीत को केवल तीनताल में ही गाया जाता है।

क) हां

ख) नहीं

11.10 भूपाली राग, कल्याण तथा कामोद रागों का मिश्रण है।

क) सही

ख) गलत

11.4 सारांश

भूपाली राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत की गायन विधा के अंतर्गत इस राग को बजाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। भूपाली राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में द्रुत गत, मध्य तथा तेज लय में बजाई जाती है। द्रुत गत में तोड़ों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तोड़ों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

11.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- द्रुत गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा मध्य या द्रुत लय में बताई जाती हो उसे द्रुत गत कहते हैं।
- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को ‘लय’ कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।

- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

11.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

11.1 उत्तर: ग)

11.2 उत्तर: घ)

11.3 उत्तर: ग)

11.4 उत्तर: क)

11.5 उत्तर: घ)

11.6 उत्तर: ग)

11.7 उत्तर: क)

11.8 उत्तर: ग)

11.9 उत्तर: ख)

11.10 उत्तर: ख)

11.7 संदर्भ

डॉ. केशव शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, मार्च 2024।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा से प्राप्त जानकारी, अप्रैल 2024।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

11.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

11.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग भूपाली का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग भूपाली का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग भूपाली की द्रुत गत को लिखिए।

प्रश्न 4. राग भूपाली की द्रुत गत के पांच तोड़ों को लिखिए।

इकाई-12
बिहाग राग की द्रुत गत
(वादन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
12.1	भूमिका
12.2	उद्देश्य तथा परिणाम
12.3	राग बिहाग
12.3.1	बिहाग राग का परिचय
12.3.2	बिहाग राग का आलाप
12.3.3	बिहाग राग की द्रुत गत
12.3.4	बिहाग राग के तोड़े
	स्वयं जांच अभ्यास 1
12.4	सारांश
12.5	शब्दावली
12.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
12.7	संदर्भ
12.8	अनुशंसित पठन
12.9	पाठगत प्रश्न

12.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA104PR की यह बाहरवीं इकाई है। इस इकाई में वादन संगीत के संदर्भ में, राग बिहाग का परिचय, आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग बिहाग के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग बिहाग का आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को बजा सकेंगे।

12.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- बिहाग राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- बिहाग राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- बिहाग राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- बिहाग राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

- बिहाग राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।
- राग बिहाग के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

12.3 राग बिहाग

12.3.1 बिहाग राग का परिचय

राग - बिहाग

थाट – बिलावल

जाति - औडव-संपूर्ण

वादी - गंधार

संवादी - निषाद

स्वर - दोनों मध्यम, शेष स्वर शुद्ध

वर्जित - आरोह में रिषभ तथा धैवत

समय - रात्रि का दूसरा प्रहर

आरोह – ऩि सा ग, म प, नि सां

अवरोह - सां नि ध प, मं प ग म ग, रे सा

पकड़ - प, मं प ग म ग, रे सा

राग बिहाग बिलावल थाट का एक राग है। इसके आरोह में रिषभ तथा धैवत वर्जित हैं। इसकी जाति औडव संपूर्ण है। बिहाग का वादी स्वर गंधार तथा संवादी स्वर निषाद है। इस राग में दोनों मध्यम प्रयुक्त होते हैंए इसका समय रात्रि का

दूसरा प्रहर माना गया है। बिहाग का आरम्भ षड्ज की अपेक्षा मंद्र निषाद में किया जाता है तथा रिषभ आरोह में वर्जित रहता है, जैसे. नि़ सा ग म। इसके आरोह में शुद्ध मध्यम का प्रयोग किया जाता है। तीव्र मध्यम का प्रयोग अवरोह में केवल पंचम की सहायता से किया जाता है जैसे - सां नि ध प, मं प, ग म ग या मं प ग म ग। बिहाग के अवरोह में रिषभ तथा धैवत स्वर अल्प हैं इसलिए अवरोह करते समय पहले गंधार तथा निषाद पर रूका जाता है। फिर रिषभ तथा धैवत का स्पर्श करते हुए षड्ज तथा पंचम पर आते हैं, जैसे . सां नि, प, मं प ग म ग, सा। बिहाग में मं प ग म ग, रे सा अवरोह में किया जाता है। मं प करने के बाद ग म ग करते हुए गंधार पर रूकते हैं फिर रे सा करते हैं।

12.3.2 बिहाग राग का आलाप

- नी़ ऩी स, सा, साऩी, साग, रेऩी, साऩी, नी़ साऩी, सा, सा,
- सा ऩी ध़ प़, प़, प़ ऩी साग, रेसा, नी़ ऩी सा, सा,
- ऩी सा ग म ग, सा ग म म ग, ग, ग म प, प
- सा ग म प, मं प मं प ग म ग, रेसा, सा, ऩी ऩी सा
- ग म प नी ऽ ध प, ध मं प, मं प ग म ग, रे सा
- ग म प नी नी सां, सां, नी सां रें सां, नी सां गं मं मं गं, रें सां
- म म प नी नी सां रें सां, गं मं पं पं, मंं पं गं मं गं, रेंसां
- सां नी ध प, प , मं प ग म ग, ग रेसा, ऩी ऩी सा सा

12.3.3 बिहाग राग की द्रुत गत

राग: बिहाग **ताल: तीनताल** **लय: द्रुत**

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई															
								सां-	-नी	--	प-	म॑	प	ग	म
								दाऽ	ऽरा	ऽऽ	दाऽ	दा	रा	दा	रा
ग	-	ग	सा	ग	म	प	-								
दा	ऽ	दा	रा	दा	रा	दा	ऽ								
								ग	मम	प	नी	सां	नीनी	ध	प
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
म॑	प	ग	म	ग	-	सा	-								
दा	रा	दा	रा	दा	ऽ	रा	ऽ								
अन्तरा															
								ग	मम	प	नी	सां	-	सां	सां
								दा	दिर	दा	रा	दा	ऽ	दा	रा
प	नीनी	सां	सां	मं	गंगं	रें	सां								
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा								
								सां	रेंरें	नी	सां	नी	ध	प	-
								दा	दिर	दा	रा	दा	रा	दा	ऽ
म॑	प	ग	म	ग	-	सा	-								
दा	रा	दा	रा	दा	ऽ	रा	ऽ								
स्थाई															
								सां-	-नी	--	प-	म॑	प	ग	म
								दाऽ	ऽरा	ऽऽ	दाऽ	दा	रा	दा	रा
ग	-	ग	सा	ग	म	प	-								
दा	ऽ	दा	रा	दा	रा	दा	ऽ								

12.3.4 बिहाग राग के तोड़े

•	गग	रेसा	ऩीऩी	ध़प़	गंगं	रेंसां	नीनी	धप
	म॑प	गम	गरे	सासा	गम	पग	म॑प	गम
•	गम	पनी	सांनी	धप	म॑प	गम	गरे	सा-
•	म॑प	गम	ग-	म॑प	गम	ग-	म॑	गम
•	ऩीसा	गम	पनी	धप	मप	धप	म॑प	गम
	गरे	सासा	ऩीसा	ऩीध़	प़प़	म़॑प़	म़॑प़	ऩीसा
	रेसा	ऩीसा	ऩीसा	गग	रेसा	ऩीसा	ऩीसा	गम
	गरे	सासा	ऩीसा	गम	प-	गम	ग-	ऩीसा
	गम	प-	गम	ग-	ऩीसा	गम	प-	गम
•	म॑प	गम	ग-	--	नीनी	धप	म॑प	गम
	ग-	--	सांनी	धप	मप	नीनी	धप	म॑प
	गम	ग-	--	गम	पनी	सांरें	सांनी	धप
	म॑प	गम	गरे	सासा	ऩीऩी	सासा	गग	मम
•	प-	ऩीसा	गग	रेसा	ऩीसा	गम	पप	मग
	गम	पप	नीनी	धप	प-	नीसां	गंगं	रेंसां
	गंगं	रेंसां	नीध	पप	म॑प	गम	गरे	सा-

गम पनी सां- गम पनी सां- गम पनी

- सांनी धप मप नीनी धप म॑प गम रेसा
  ऩीसा गम गम पसां नी- -- प- प-
  गम पसां नी- -- प- प-

- ऩीसा गम रेसा ऩीसा गम रेसा सासा ऩीसा
  गम पम गम गरे सासा ऩीसा गम पनी
  धप म॑प गम गरे सासा गम पनी सांनी
  धप म॑प गम गरे सासा ऩीसा ऩीसा गम

- म॑प गम ग- नीनी धप म॑प गम ग-
  सांनी धप मप नीनी धप म॑प गम ग-
  गम पनी सांनी धप म॑प गम गरे सा-
  ऩीसा गम ग- ऩीसा गम ग- ऩीसा गम

- ऩीसा गम पनी सारें सांनी धप म॑प गम
  गरे सासा गम पनी सांगं रेंसां नीध पप
  म॑प गम गरे सासा

- नीस़ा रे,ऩी सारे, ऩीसा,
  ऩीऩी ध़प़ ऩीसा रेसा
  गम प,ग मप, गम,

गम	पध	म॑प	गम
पनी	सां,प	नीसां,	पनी,
पनी	सारें	सांनी	रेंसां
गंगं	रेंसां	नीसां	रेंसां
नीनी	धप	म॑प	गम
गग	रेसा	ऩीसा	गम
पम	गम	ग-	--
--	--	ऩीसा	गम
पम	गम	ग-	--
ऩीसा	गम	पम	गम

स्वयं जांच अभ्यास 1

12.1 बिहाग राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) ग

घ) म

12.2 बिहाग राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) म

ख) रे

ग) प

घ) नी

12.3 बिहाग राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) रात्रि का दूसरा प्रहर

घ) दोपहर

12.4 बिहाग राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) गंधार

ख) षड़ज

ग) धैवत

घ) कोई भी नहीं

12.5 बिहाग राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) ग

ख) म

ग) रे

घ) कोई भी नहीं

12.6 बिहाग राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) आसावरी

ग) बिहाग

घ) बिलावल

12.7 बिहाग राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) प ग म ग, रे सा

ख) ध सां नि ध प, म ग

ग) ध नि ध प म ग प ध नी

घ) ध नि सां रें नी ध प, म ग

12.8 बिहाग राग की द्रुत ख्याल/लक्षण गीत में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 12

12.9 बिहाग राग की द्रुत ख्याल/लक्षण गीत को केवल तीनताल में ही गाया जाता है।

क) हां

ख) नहीं

12.10 बिहाग राग, कल्याण तथा भैरव रागों का मिश्रण है।

क) सही

ख) गलत

12.4 सारांश

बिहाग राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत की वादन विधा के अंतर्गत इस राग को बजाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। बिहाग राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में द्रुत गत, मध्य तथा तेज लय में बजाई जाती है। द्रुत गत में तोड़ों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तोड़ों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

12.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।

- द्रुत गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा मध्य या द्रुत लय में बताई जाती हो उसे द्रुत गत कहते हैं।
- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

12.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

12.1 उत्तर: ग)

12.2 उत्तर: घ)

12.3 उत्तर: ग)

12.4 उत्तर: घ)

12.5 उत्तर: ग)

12.6 उत्तर: घ

12.7 उत्तर: क)

12.8 उत्तर: ग)

12.9 उत्तर: ख)

12.10 उत्तर: ख)

12.7 संदर्भ

डॉ. केशव शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, मार्च 2024।

डॉ. निर्मल सिंह से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, अप्रैल 2024।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

12.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

12.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग बिहाग का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग बिहाग का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग बिहाग की द्रुत गत को लिखिए।

प्रश्न 4. राग बिहाग की द्रुत गत के पांच तोड़ों को लिखिए।

इकाई-13
ताल

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
13.1	भूमिका
13.2	उद्देश्य तथा परिणाम
13.3	एक ताल का परिचय तथा स्वरलिपि
13.4	झप ताल का परिचय तथा स्वरलिपि
	स्वयं जांच अभ्यास 1
13.5	सारांश
13.6	शब्दावली
13.7	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
13.8	संदर्भ
13.9	अनुशंसित पठन
13.10	पाठगत प्रश्न

13.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA104PR की यह ग्यारहवीं इकाई है। इस इकाई में शास्त्रीय संगीत में प्रयुक्त होने वाली कुछ तालों को विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत में तालों का विशेष महत्व रहता है। गायन और वादन के साथ विभिन्न प्रकार की तालों को बजाया जाता है। इन तालों में एक ताल, झप ताल आदि तालें प्रयोग की जाती हैं। इन तालों को एकगुण, दुगुण, तिगुण व चौगुण लयकारियों में तबले पर बजाया जाता है तथा हाथ पर ताली देकर भी प्रदर्शित किया जाता है। इस तालों को शास्त्रीय संगीत की बंदिशों के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि क साथ भी बजाया जाता है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी एक ताल तथा झप ताल की मूलभूत जानकारी प्राप्त कर सकेंगे तथा क्रियात्मक रूप से उन्हें बजा सकेगें।

13.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- एक ताल तथा झप ताल का परिचय प्रदान करना।
- एक ताल तथा झप ताल को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- एक ताल तथा झप ताल की लिखने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी, ताल के संदर्भ में, एक ताल तथा झप ताल के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी, ताल के संदर्भ में, एक ताल तथा झप ताल को बजाने में सक्षम होगा।

- विद्यार्थी में, ताल के संदर्भ में, एक ताल तथा झप ताल के वादन द्वारा कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास होगा।
- विद्यार्थी में, ताल के संदर्भ में, एक ताल तथा झप ताल को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी।

13.3 एक ताल का परिचय तथा स्वरलिपि

मात्राएं 12

विभाग 06

ताली 04

खाली 02

एक ताल 12 मात्रा की ताल है। यह ताल 6 विभागों में विभक्त है। हर विभाग 2 मात्राओं के होते हैं। इस ताल में पहली मात्रा पर सम, पहली,पांचवी, नौवीं व ग्याहरवीं मात्रा पर ताली तथा तीसरी व सातवीं मात्रा खाली होती है। इस ताल का प्रयोग शास्त्रीय संगीत, उप शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत इत्यादि लगभग सभी विधाओं में होता है। यह ताल विलंबित लय, मध्य लय, द्रुत लय तीनों लयों में बजाई जाती है। इस ताल में बड़ा ख्याल, छोटा ख्याल, विलंबित गतें, द्रुत गतें, ठुमरी इत्यादि गाए-बजाए जाते हैं। गायन में इस ताल का प्रयोग अधिक किया जाता है।

ताललिपि

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
एकगुण											
धिं	धिं	धागे	तिरकिट	तू	ना	क	ता	धागे	तिरकिटधी	ना	
x		**0**		**2**		**0**		**3**		**4**	

ताललिपि

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
एकगुण											
धिं	धिं	धागे	तिरकिट	तू	ना	क	ता	धागे	तिरकिटधी	ना	
x		**0**		**2**		**0**		**3**		**4**	

ताललिपि

1	2	3	4	5	6	7	8	9	0	11	12
दुगुण											
धिंधिं	धागेतिरकिट	तूना	कता	धागेतिरकिट	धीना	धिंधिं	धागेतिरकिट	तूना	कता	धागेतिरकिट	धीना
x		**0**		**2**		**0**		**3**		**4**	

1	2	3	4	5	6	7	8	9	0	11	12
दुगुण											
धिंधिं	धागेतिरकिट	तूना	कता	धागेतिरकिट	धीना	धिंधिं	धागेतिरकिट	तूना	कता	धागेतिरकिट	धीना
x		**0**		**2**		**0**		**3**		**4**	

काललिपि

तिगुण

1	2	3	4	5	6
धिंधिंधागे	तिरकिटतूना	कताधागे	तिरकिटधीना	धिंधिंधागे	तिरकिटतूना
x		**0**		**2**	
7	8	9	10	11	12
कताधागे	तिरकिटधीना	धिंधिंधागे	तिरकिटतूना	कताधागे	तिरकिटधीना
0		**3**		**4**	

तिगुण

1	2	3	4	5	6
धिंधिंधागे	तिरकिटतूना	कताधागे	तिरकिटधीना	धिंधिंधागे	तिरकिटतूना
x		**0**		**2**	
7	8	9	10	11	12
कताधागे	तिरकिटधीना	धिंधिंधागे	तिरकिटतूना	कताधागे	तिरकिटधीना
0		**3**		**4**	

चौगुण

1	2	3	4	5	6
धिंधिंधागेतिरकिट	तूनाकता	धागेतिरकिटधीना	धिंधिंधागेतिरकिट	तूनाकता	धागेतिरकिटधीना
x		**0**		**2**	
7	8	9	10	11	12
धिंधिंधागेतिरकिट	तूनाकता	धागेतिरकिटधीना	धिंधिंधागेतिरकिट	तूनाकता	धागेतिरकिटधीना
0		**3**		**4**	

13.4 झप ताल का परिचय तथा स्वरलिपि

मात्राएं 10

विभाग 04

ताली 03

खाली 01

झपताल 10 मात्राओं की ताल है। इसमें 4 विभाग हैं। पहले व तीसरे विभाग में 2-2 मात्राएं तथा दूसरे व चौथे विभाग में 3-3 मात्राएं हैं। पहली मात्रा पर सम, छटी मात्रा पर खाली, पहली, तीसरी तथा आठवीं मात्राओं पर ताली है। झपताल मुख्य रूप से तबले पर बजाई जाती है।

ताललिपि

x		2			0		3		
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
एकगुण									
धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना

x		2			0		3		
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
एकगुण									
धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना

दुगुण

x		2			0		3		
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
धीना	धीधी	नाती	नाधी	धीना	धीना	धीधी	नाती	नाधी	धीना

दुगुण

x		**2**			**0**		**3**		
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
धीना	धीधी	नाती	नाधी	धीना	धीना	धीधी	नाती	नाधी	धीना

तिगुण

x		**2**		
1	2	3	4	5
धीनाधी	धीनाती	नाधीधी	नाधीना	धीधीना
0		**3**		
6	7	8	9	10
तीनाधी	धीनाधी	नाधीधी	नातीना	धीधीना

तिगुण

x			**2**		
1	2		3	4	5
धीनाधी	धीनाती	नाधीधी	नाधीना	धीधीना	
0			**3**		
6	7		8	9	10
तीनाधी	धीनाधी	नाधीधी	नातीना	धीधीना	

चारगुण

x		2		
1	2	3	4	5
धीनाधीधी	नातीनाधी	धीनाधीना	धीधीनाती	नाधीधीना
0		**3**		
6	7	8	9	10
धीनाधीधी	नातीनाधी	धीनाधीना	धीधीनाती	नाधीधीना

चौगुण की लय

x		2		
1	2	3	4	5
धीनाधीधी	नातीनाधी	धीनाधीना	धीधीनाती	नाधीधीना
0		**3**		
6	7	8	9	10
धीनाधीधी	नातीनाधी	धीनाधीना	धीधीनाती	नाधीधीना

स्वयं जांच अभ्यास 1

13.1. एक ताल में कितनी मात्राएं होती हैं?

क) 10

ख) 12

ग) 14

घ) 16

13.2. तीन ताल में कितनी ताली होती हैं?

क) 1

ख) 2

ग) 3

घ) 4

13.3. एक ताल में खाली कौन सी मात्रा पर होती हैं?

क) 1

ख) 5

ग) 3

घ) 13

13.4. एक ताल में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 1

ख) 5

ग) 9

घ) 13

13.5. झप ताल में कितनी मात्राएं होती हैं?

क) 10

ख) 12

ग) 6

घ) 8

13.6. झप ताल में कितनी ताली होती हैं?

क) 1

ख) 2

ग) 3

घ) 4

13.7 झप ताल में खाली कौन सी मात्रा पर होती हैं?

क) 4

ख) 5

ग) 6

घ) 3

13.8. झप ताल में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 1

ख) 6

ग) 3

घ) 5

13.9. एक ताल में 11वीं मात्रा पर कौन सा बोल होता है?

क) धा

ख) क

ग) धी

घ) ता

13.10 झप ताल में 5वीं मात्रा पर कौन सा बोल होता है?

क) ना

ख) धी

ग) ती

घ) ता

13.5 सारांश

भारतीय शास्त्रीय संगीत में गायन और वादन के साथ विभिन्न प्रकार की तालों को बजाया जाता है। इन तालों में एक ताल तथा झप ताल विशेष रूप से प्रयोग की जाती हैं। एक ताल 12 मात्रा तथा झप ताल 16 मात्रा की ताल है। इन तालों को एकगुण, दुगुण, तिगुण व चौगुण लयकारियों में तबले पर बजाया जाता है तथा हाथ पर ताली देकर भी प्रदर्शित किया जाता है। इन तालों का प्रयोग शास्त्रीय संगीत की बंदिशों, गतों के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि क साथ भी बजाया जाता है।

13.6 शब्दावली

- एकगुण: ठाह लय में बोलों को बजाना।
- दुगुण:- दुगनी लय में बोलों को बजाना।
- तिगुण: तिगुनी लय में बोलों को बजाना।
- चौगुण:- चौगुनी लय में बोलों को बजाना।

13.7 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

13.1 उत्तर: क)

13.2 उत्तर: घ)

13.3 उत्तर: ग)

13.4 उत्तर: क)

13.5 उत्तर: क)

13.6 उत्तर: क)

13.7 उत्तर: ग)

13.8 उत्तर: क)

13.9 उत्तर: ग)

13.10 उत्तर: क)

13.8 संदर्भ

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

13.9 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

13.10 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. एक ताल का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. झप ताल का परिचय लिखिए।

प्रश्न 3. एक को हाथ पर प्रदर्शित तथा बोलकर बताइए।

प्रश्न 4. झप ताल को हाथ पर प्रदर्शित तथा बोलकर बताइए।

महत्वपूर्ण प्रश्न - कार्यभार

प्रश्न 1. राग यमन का परिचय तथा सरगम गीत लिखिए।

प्रश्न 2. राग भूपाली का परिचय तथा सरगम गीत लिखिए।

प्रश्न 3. राग बिहाग का परिचय तथा सरगम गीत लिखिए।

प्रश्न 4. राग यमन, भूपाली, बिहाग के पांच-पांच अलंकार लिखिए।

प्रश्न 5. राग यमन का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 6. राग यमन का आलाप, छोटा ख्याल/द्रुत गत पांच तानों/तोड़ों सहित लिखिए।

प्रश्न 7. राग भूपाली का आलाप, छोटा ख्याल/द्रुत गत पांच तानों/तोड़ों सहित लिखिए।

प्रश्न 8. राग बिहाग का आलाप, छोटा ख्याल/द्रुत गत पांच तानों/तोड़ों सहित लिखिए।

प्रश्न 10. एकताल तथा झप ताल का पूर्ण परिचय लिखिए।